"रामचरित मानस में राजतंत्रीय सांस्कृतिक समन्वय"

भारत में संस्कृतियों का जो विराट समन्वय हुआ है रामकथा उसका अत्यन्त उज्जवल प्रतीक है । सबसे पहले तो यह बात है कि उस कथा से भारत की भौगोलिक एकतां ध्वनित होती है । एक ही कथा सूत्र में अयोध्या किष्किंधा और लंका तीनों के बंध जाने के कारण सारा देश एक दिखता है । दूसरे इस कथा पर भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में रामायणों की रचना हुई, जिनमें से प्रत्येक अपने-अपने क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय रही है तथा जिनके प्रचार के कारण भारतीय संस्कृति की एकरुपता में बहुत वृद्धि हुई है । संस्कृति के धार्मिक साहित्य में रामकथा का स्थान अपेक्षाकृत कम व्यापक रहा फिर भी रघुवंश, भट्टिकाव्य, महावीर-चरित, उत्तर रामचरित, प्रतिबानाटक, जानी हरण, कन्दमाला, अनध-राघव बालरामायण, हनुमन्नाटक, अध्यात्म रामायण अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण आदि अनेक काव्य इस बात केप्रमाण हैं कि भारतवर्ष के अनेक क्षेत्रों के कवियों पर वाल्मीकि रामायण का कितना गम्भीर प्रभाव पड़ा था । जब देश-भाषाओं का काल आया तब देश-भाषाओं में भी रामचरित पर एक से एक उत्तम काव्य लिखे गए और आदि कवि के काव्य सरोवर का जल पीकर भारत की सभी भाषाओं ने अपने आप को पुष्ट किया ।[1]

रामकथा उद्भव एवं विकास

रामकथा ऐतिहासिक दृष्टि :-

ऋग्वेद् के दसम मण्डल के आठवें सूत्र में आपव्य की द्वारा त्वष्टा के पुत्र (वृत्र) को मारकर बन्दी की गई गौवों (यहां गौ अर्थात किरण) को छुड़ाने का वर्णन है । यहाँ त्रित आपव्य की प्रकाश के प्रतीक के रुप में चित्रित है और वृत्र अन्धकार का रुपक है त्रित द्वारा वृत्र के नाश में अन्धकार पर प्रकाश की विजय ही चरितार्थ की गई है ।[2]

वृत्र सम्बन्धी एक अन्य कथा इस प्रकार इन्द्र से सम्बन्धित है। वृत्र एक भयंकर राक्षस है । वह गौवों को चुराकर ले जाता है जिससे पृथ्वी पर अन्धकार छा जाता है । इन्द्र की स्तुति एव प्रार्थना होती है और वह अपने साथियों सहित वृत्र के गढ़ों का उच्छेद कर इन्द्र गौवों को मुक्त करते हैं और वृत्र इन्द्र के हाथों मारा जाता है । उषा एवं सूर्य का उदय होता है । इसी से इन्द्र को वृत्रहन भी कहा गया है ।[3]

इस कथा को ऋग्वेद 5/45/1 में एक ही (श्लोक) ऋचा में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है ।

"उत्तर ध्रुव सें गंगा" ग्रन्थ के लेखक के अनुसार इस कथा में आर्यों के ध्रुववास की जन-श्रुति सन्निहित है जहां कई महीनों के अन्धकार के बाद सूर्योदय होता है । उन्होंने बलिबन्ध में भी इसी सन्दर्भ को पढ़ा है । विष्णु सूर्य के प्रतीक है वृत्र युद्ध में उन्होने इन्द्र का ही साथ दिया था । इन्द्र की सहायता के लिए जो देवता है उनमें वार भी है, यह दृष्टव्य है कि राम रावण युद्ध में बात-जात (हनुमान) राम के सहायक है और राम सूर्यवंशी हैं ।

इन्द्र की वृत्रध्नता को आदिकवि ने "राम-रावण" युद्ध के रुप

में कल्पित कर लिया हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है । तुलसी दास जी भी ''राम-रावण'' युद्ध को ''धर्म-अधर्म'' के सनातन संघर्ष के रुप में ही प्रस्तुत करते हैं ।

यहां अन्धकार एवं प्रकाश का युद्ध धर्माधर्म के संघर्ष का रुपक ही है, इस प्रकार रावणारि राम के रुप में वृत्र हंता इन्द्र की प्रतिष्ठा स्वतः हो जाती है और राम का को दण्ड इन्द्र के वज्र का स्थान ले लेता है । तुलसी के लिए राम-रावण युद्ध ही कथा का केन्द्रिय रुप है, क्योंकि रावण के अत्यचारों एवं पृथ्वी की प्रार्थना से ही कथा का आरम्भ होता है एव रामराज्य की स्थापना पर ही कथा समाप्त होती है ।[4]

इन्द्र वैदिक शौर्य के प्रतीक है, परन्तु उनका शौर्य धर्म का वाहन है, स्वतंत्र रुप से उसकी कोई सत्ता नहीं है ।[5]

विष्णु को उपेन्द्र भी कहा गया है एवं राम विष्णु के अवतार होने के कारण उपेन्द्रता से भूषित है, परन्तु तुलसी उन्हें विष्णु से कहीं ऊपर ब्रह्म के रुप में प्रतिष्ठित करते हैं । उनके राम में वरुण ऋतचित, इन्द्र का तेज और बुद्ध की करुणा एक साथ दृष्टिगोचर होती है यह सत्य है कि तुलसी ने राम की इस धर्म संस्थापना को प्राचीन परम्परा से ही प्राप्त किया है । भगवत गीता का अविकल्प अनुवाद ब्रह्म द्वारा पृथ्वी को दिए गये आश्वासन में मिलता है परन्तु उसका निर्वाह जिस विराट पृष्ठभूमि पर जिस विदग्धता और स्फूर्ति से हुआ है वह इन्द्र वृत्र सम्बन्धी वैदिक परम्परा की जातीय या राष्ट्रीय चेतना का ही प्रसार है ।[6]

ऋग्वेद संहिता में राम शब्द का उल्लेख आया है । पं. चिन्तामणि विनायक वैद्य के अनुसार यह राम शब्द श्री रामचन्द्र का ही सूचक है इससे यह सिद्ध होता है कि ऋग्वेद की इससे मण्डल की रचना से पूर्व भी श्रीराम का अस्तित्व एवं राम का का अस्तित्व था यजुर्वेद एवं अथर्वेद में भी राम के अस्तित्व का उल्लेख मिलता है ।

राम कथा और भारतीय संस्कृति का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है (2) उन दोनों का विकास एक दूसरे का पूरक कहा जाय तो अनिश्योक्ति नहीं होगी रामकथा भारतवर्ष की सांस्कृतिक विचार धारा के विकास का ही दूसरा स्वरुप है (3) अधर्म के उपर धर्म की जय के साथ-साथ नारायण की दिव्यता का जो स्वरुप दिखाई दिया है उसे ही हम रामकथा मान सकते हैं (1) गोस्वामी तुलसी दास ने स्वयं लिखा है

नाना-पुराण निगमागम सम्मन यद्
रामायणे गिगदिनं वचचिदन्योऽपि ।
स्वान्तः सुखय तुलसी रघुनाथ गाथा (2)
भाषा निबन्ध मति मंजुल मातनोति ॥ (3)

राम चरित मानस का अध्ययन करने पर हमें यह ज्ञात होता है कि उन्होने पुराणों से कथानक ग्रहण किया, वेदों उपनिषदों से ज्ञान चर्चा ली एवं शास्त्रों से ज्ञान एवं भक्ति को ग्रहण किया एवं सबका सार ग्रहण करके अपनी बुद्धि एवं कौशल के द्वारा उसे परिमार्जित कर जन सामान्य की भाषा में प्रस्तुत किया है (4)

यदि हम क्रमानुसार देखें तो -

1. पुराण - भागवत-पुराण, पद्म-पुराण स्कन्द पुराण, शिवपुराण, ब्रह्माण्ड-पुराण ब्रह्मवैवर्त पुराण, मार्कण्डेयपुराण तथा नरसिंह पुराण, हरिवंश पुराण, अग्निपुराण, नारदपुराण, वायुपुराण, कूर्मपुराण, मत्स्य पुराण

2. निगम - (वैदिकवाङ्मय) ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तैत्तिरीय उपनिषद्, श्वेताश्वर उपनिषद तथा शाकटायन, उपनिषद् (4)

3. आगम - शैव (शाक्त), वैष्णव शास्त्र तथा दर्शन नारद पंचरात्न अहिर्बध्न्य संहिता (4)

4. रामायण - वाल्मीकि रामायण (4) वचचिदन्योऽपि -

1. महाभारत-वाल्मीकि के साथ-साथ तुलसी दास जी ने आदि कवि व्यास जी को भी प्रणाम कर आदर दिया है ।

2. महाकाव्य - महाभारत, रघुवंश, जानकी हरण, महिकाव्य,

3. नाटक - प्रसन्न राघव, हनुमन्नाटक

4. नीतिग्रन्ध - पंचतंत्र हितोपदेश चाणक्यनीति, भर्तहरिशतक

5. गीता - श्रीमदभगवतगीता, गुरु-गीता, पाण्डव-गीता ।

राम कथा के विकास का प्रथम (चरण) सोपान वाल्मीकि कृत रामायण है (2)(3) ईसवी पूर्व चौथी शताब्दी तक राम कथा सम्बन्धी आख्यानों की रचना होने लगी थी । वैदिक काल के बाद इश्वाकु वंश के सूतो द्वारा इन आख्यानों की रचना की जाने लगी थी ।

उसी समय स्फुट आख्यान काव्य के आधार पर श्री वाल्मीकि ने राम कथा पर आधारित एक विस्तृत काव्य ''रामायण'' की रचना की । इसमें राम कथा की रचना एक नर काव्य के रुप में की गई।(2) रामायण की कथा के राम के स्वरुप में एक आदर्श क्षत्रिय और वीर प्रतापी राजा के रुप में हमारे सामने आते हैं 3 वे ऐसे राजा थे जो सभी तरह से परिपूर्ण थे ।

रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का वर्णन है उसमें विष्णु के अवतार माने गए हैं ।(4)

इसमें सात काण्डों के अन्तर्गत उनका सम्पूर्ण जीवन चरित्र है । वाल्मीकि रचित रामायण भारतीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ एवं सम्मानित गृहस्थ आश्रम का महान काव्य माना जाता है ।(1)(2)

इसमें राम को आदर्श पुत्र भाई शिष्य पति एवं एक आदर्श स्वरुपों का चित्रण करते हुए अपनी लेखनी की कुशलता को प्रकट किया है । लौकिक संस्कृति में सर्वप्रथम काव्य रचना करने के कारण

ही महर्षि वाल्मीकि आदि कवि के नाम से प्रख्यात हुए । (2) जन श्रुतियों पर चूकि आधारित ही रहा जा सकता है अतः प्रामाणिकता के आधार पर हम उसे प्रथम रामायण कह सकते है । यद्यपि यह सत्य है कि राम कथा पुरातन काल से चली आ रही है ।

आदि कवि को प्रेरित करने वाली प्रेरणा भी अद्भुत थी ।

एक दिन वे स्नान करने के लिए तमसा नामक नदी पर जा रहे थे उस समय तट पर कोंच पक्षी का एक जोड़ा क्रिड़ा-रज था उसी समय एक शिकारी वहां आ पहुँचा एवं उसने उन पर तीर चला दिया जिससे कौंच मारा गया एवं कोंची करुण कन्दन करने लगी । कवि वाल्मीकि इस मर्मान्तिक करुण दृश्य से द्रवित हो उठे एवं उनके मुख से अनायास ही कुछ शब्द श्लोक के स्वरुप में प्रस्फुटित हुए जिनमें उस व्याघ्र को श्राप दिया गया था ।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः ।
यत्, कौञ्य मिथुनादेकमवधीः काममोहितय ।।

इसी समय ब्रह्माजी ने प्रकट होकर उन्हें ''दिव्य रामकथा'' लिखने का आदेश दिया जो कथा अपने आप में भी करुण रस की उत्पत्ति करने वाली थी । राम-कथा को सुसंस्कृति स्वरुप देने का श्रेय वाल्मीकी को ही प्राप्त होता है ।(1) वाल्मीकि रामायण आज भी आदरणीय है एवं रहेगी । वाल्मीकि राम के समकालीन थे (2) कुछ विद्वानों का कथन है कुछ इन्हें परवर्ती मानते हैं कुछ पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि रामायण की कथा का आविर्भाव अयोध्या के इक्ष्वकु राजाओं द्वारा शासित कौशल देश में हुआ (3) वाल्मीकि से पूर्व इस कथा के अनेक रुप सूतों द्वारा प्रचलित थे अश्वघोष ने अपने बुद्ध चरित में इस बात की पुष्टि करते हुए लिखा है कि -

वाल्मीकि जानश्च ससर्ज पद्यजग्रन्थयन्न च्यवनों महर्षि :-(1)

वाल्मीकि मुनि अवश्य ही श्रीराम के समकालीन रहे होंगे, क्योंकि

निर्वाचित सीता के आश्रयदाता के रुप में दृष्टिगोचर होते हैं सीता उन्हीं के आश्रम में आश्रय ग्रहण करती है साथ ही लव एवं कुश को भी वही जन्म देती है

तां सीतां शोकभारार्तावाल्मीकिमुनि पुंगवः
उवाच मधुरां वाणी हृदयन्निव तेजसा-
स्नुषा दशरथस्य एवं रामस्य महिषी प्रिया
जनकस्य सुता राज्ञः स्वागतं ते पतिव्रते -(1)

भगवन रामपत्नी आ प्रसूता दारकद्वयम्,
तत्तो रक्षां महातेजः कुरु भूतविनाशिनीय -(2)

इन सभी प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि राम के राज्य के समय में ही वाल्मीकि ने उस समय की प्रचलित रामकथा जो कि तब तक किसी ने भी अपनी लेखनी द्वारा अपने काव्य का माध्यम नहीं बनाया था । को ग्रहण करके अपनी सुसंस्कृत भाषा में आदर्श स्वरुप प्रदान कर जन मानस के समक्ष प्रस्तुत किया था ।

लौकिक संस्कृत में सर्वप्रथम काव्य रचना का सृजन करने के कारण ही रामायण को आदिकाव्य व वाल्मीकि को आदि कवि कहा जाता है (1) रामायण काव्य परम्परा -

इसके बाद अनेक रामायणों की रचना की गई जिनमें -(2)

1. महर्षि नारद - कृत संस्कृत रामायण
2. महर्षि अगस्त - कृत अगस्त रामायण
3. लोमेश - कृत लोमेश रामायण
4. महर्षि अत्रि - कृत सौपद्य रामायण
5. महर्षि सुतीक्ष्ण - कृत मञ्जुल रामायण
6. महर्षि शरभंग - कृत सौहार्द रामाण
7. महर्षि - कृत शोर्य रामायण
8. - कृत चान्द रामायण

9. - कृत सुब्रह्म रामायण

10. - कृत मन्द रामायण (2)

11. - कृत रामायण मणिरत्न

12. सुवर्चरु रामायण

13. श्रावण रामायण

14. दुरन्न रामायण

15. रामायण महामाला

16. देव रामायण

17. अध्यात्म रामायण

18. अद्‌भुत रामायण -

रामायण के रचना काल पर बहुत मतभेद रहा है । भारतीय परम्परा व रामायण के ही अन्तर्गत प्रमाणों के अनुसार जो इसकी रचना आदिकवि ने श्री राम के राज्य में ही पूर्ण कर ली थी । पाश्चात्य विद्वान पार्जीटर के अनुसार श्री राम का काल - 1600 ई. पू. में माना जाता है । पन्तु विभिन्न अनुसंधान एवं शोध से यह स्पष्ट होता है कि वाल्मीकि रामायण से भी पहले रामकथा प्रसिद्ध थी एवं वाल्मीकि ने उसी को आधार बनाकर यह रामायण लिखी थी परन्तु उस रामायण में भी प्रक्षिप्ति अंश जुड़ने रहने के कारण उसके कलेवर में आवश्यकतानुसार वृद्धि होती गई ।

विद्वानों का कथन है कि रामायण में कहीं पर भी बौद्ध धर्म का सकेत मात्र भी नहीं है अतः यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि यह ई. पू. पाँचवी शताब्दी या उसके आसपास के विद्वान पाणिनि, कौटिल्य; भास पतंञ्जलि आदि इनसे परिचित थे । रामायण की भाषा भी इसे पाणिनि का पूर्ववर्ती ही सिद्ध करती है । पाणिनि ने उसमें प्रयुक्त अनेक शब्दों अनेक शब्दों की व्युत्पत्ति भी प्रदर्शित की है । रामायण की भाषा शैली महाभारत की भाषा शैली की अपेक्षा अधिक परिष्कृत सुसंगठित एवं अलंकृत है जबकि रामायण महाभारत से अधिक प्राचीन ग्रन्थ है यह सवविदित है यह आदिकाव्य होते हुए भी अभूतपूर्व

व्यवस्थित परिमार्जित एवं परिष्कृत ग्रन्थ है इसमें वाल्मीकि की चिन्तन शक्ति का स्पष्ट स्वरुप दिखाई देता है उनका कवि हृदय अपनी सम्पूर्ण काव्य सृजन शक्ति के साथ कार्य करता है । आदिकवि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति बड़े ही सुन्दर एवं सरल ढंग से की है ।

प्रसिद्धि विद्वान बलदेव उपाध्याय के अनुसार -

भारतीय गृहस्थ जीवन का विस्तृत चित्रण रामायण कर मुख्य उद्देश्य प्रतीत होती है । आदर्श पिता माता आदर्श भ्राता आदर्श पति आदर्श पत्नी आदि जिसने आदर्शो को इस अनुपम महाकाव्य में आदिकवि की शब्दतूलिका ने खींचा है वे सब चित्र गृहधर्म के पट पर ही चित्रित किए गये हैं । इतना ही क्यों राम-रावण का वह भयानक युद्ध भी इस काव्य की रचना का उद्देश्य नहीं कहा जा सकता है ।(1)

कवि का हृदय जो केवल परस्पर हरेक के (हर रिश्ते के) एक दूसरे के प्रति विशुद्ध प्रेम व उसकी निष्कपट अभिव्यक्ति को ही पाठको तक पहुँचाना चाहता है ।

रामायण को हम सभी ने अपनी धरोहर के रुप में स्वीकार किया है जिसमें प्राचीन भारतीय संस्कृति अपनी गरिमा को छुपाए हुए है । आज भी किसी व्यक्ति को अपने बच्चों को अच्छे संस्कारों का सिंचन करना होता है जो वे उन्हें रामायण का ही पठन करने का आग्रह करते हैं चूँकि रामायण को भारतीय सभ्यता ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए प्रमुख साधन बना रखा है और भारतीय सभ्यता की प्रतिष्ठाग गृहस्थाश्रम में है अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि आदि कवि ने अपने इस महान ग्रन्थ में चारित्रिक दृढ़ता आध्यात्मिक शक्ति संस्कारगत सरलता मर्यादित आचरण वैचारिक विनम्रता एव व्यवहारिक सहजता आदि का ही प्रणयन किया है ।

लौकिक संस्कृत में सर्वप्रथम काव्य रचना करने के कारण ही

वे कवि केस्थान पर आदिकवि कहे गये परन्तु उनके साहित्य सृजन में कहीं पर भी हमें यह प्रतीत नहीं हुआ है कि यह प्रथम ग्रन्थ है । रामायण सर्वगुण सम्पन्न एवं काव्य प्रवीण कवि के काव्य का स्वरुप ही जान पड़ता है । इस गुण अलंकार तथा ध्वनि सभी का भेद प्रभेदों के उदाहरण हमें इसमें प्रचुर मात्रा में मिल जाते हैं ।

रामायण की रचना महाभारत से पहले हुई है इसमें भी काफी विवाद है परन्तु विद्वानों की प्राचीन परम्परा राम एवं वाल्मीकि को समकालीन मानने के पक्ष में है । रामायण में उल्लेखित देशों द्वीपों भौगोलिक परिस्थितियों तथा घटनाओं के अनुसार इसका रचनाकाल दूसरी शताब्दी ई.पू. से पूर्ववर्ती सिद्ध होता है । यह स्पष्ट है कि बौद्ध धर्म का कभी भी इसमें उल्लेख नहीं है इससे इसकी मूलकथा ई.पू. ८00 से ६00 तक हो चुकी थी तथा दीपकों सहित इसका अन्तिम संस्करण ई.पू. दूसरी शताब्दी तक माना जाता है ।

रामायण में आदि काव्योचित काव्य सौन्दर्य प्रभूत मात्रा में उपलब्ध है । काव्य शास्त्र के अनुसार एक समृद्ध रचना है इसको हम इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं -

1. सर्वप्रथम रामाभिषेक के लिए उत्सुकजन समुदाय की भीड़भाड़ का यह चित्रण कितना सटीक है -

करेणु मातंगरथाश्व संकुलं
    महाजनौधैः परिपूर्वचत्वरम् ।
प्रभूतरत्नं बहु पुण्य संचय
    ददर्श रामों विमलं महापथम् ॥(1)

या फिर -

राम के प्रति सीता का अनुरक्तिमूलक अनन्य भाव वन में सहगमन की अनिवार्यता को स्पष्ट करते हुए यह कहना -

अनन्यभावामनुरक्त चेतसं
त्वचा विरुक्ता मरणायनिश्चिताम्
नयस्व मा साधु कुरुष्व याचनां (2)
नानो मया ने गुरुता भविष्यति ॥(1)

उसी प्रकार सीता जी के प्रति राम का अनन्य अनुराग था वह उनके हरण के पश्चात् असह्य मनोवेदना एवं पीड़ा के रुप में स्पष्ट दिखाई देता है -

मया विहीना विजने बने सा
रक्षोभिराहृत्यं विकृष्यमाणां ।
नूनं विनादं कुररीव दीना
रजा मुक्तवत्यायतकान्तंनेत्रत्रा ॥11॥(2)

इस प्रकार वाल्मीकि की रचना हर तरह से काव्य के सभी श्रेष्ठ गुणों से युक्त है ।

रामायण के पश्चात् संस्कृत साहित्य में सरस्वती के वरद पुत्र कविकुल चूड़ामणि तथा भारतीय संस्कृति के महान व्याख्याता महाकवि कालीदास का नाम लिया जाता है ।(3) महाकवि कालीदास के महान काव्य रघुवंश की बड़ी प्रसिद्धि है ।(4) पाश्चात्य विद्वान कीथ ने इसे इनकी प्रोढि प्रतिभा को अभिव्यक्त करने वाला ग्रन्थ माना गया है ।(1)

रघुवंश उन्नीस सर्गो में रचित सूर्यवंशी राजाओं के वंश का वर्णन है वास्तविकता का समावेश करने के लिए ही इसमें विवेचनीय 27 राजाओं में से केवल 20 राजाओं का संक्षिप्त उल्लेख मात्र करते छोड़ दिया है ।

यहां पर इसका व वाल्मीकि रामायण का तुलनात्मक अध्ययन र्या किया जाए तो यह ज्ञान होगा कि दोनों महाकवियों ने एक ही रामकथा के पसंगों को भिन्न-भिन्न प्रकार से अपने काव्य का माध्यम

बनाया है ।

यहां पर यह स्पष्ट होता है कि कवि कालीदास के द्वारा रचित रघुवंश की कथा पर वाल्मीकि रामायण की अपेक्षा पद्मपुराण का अधिक प्रभाव दिखाई देता है । दोनों महाकाव्यों में वर्णित वंशावली के क्रमों में भी अन्तर है एवं उसमें वर्णित राजाओं के नामों में भी काफी अन्तर है । वैसे हमारा ध्येय केवल राम कथा की ऐतिहासिकता को स्पष्ट करना है अतः हम राम कथा से ही अपने मत की पुष्टि करते हैं ।

रघुवंश के प्रथम राजा दिलीप है जो कि रामचन्द्र जी के पूर्वज माने जाते हैं जो इस प्रकार स्पष्ट है -

दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न, लव-कुश।

वंशसंख्यागत भिन्नता के अलावा मूलककथा में भी कहीं-कहीं अन्तर पाया जाता है जैसे वाल्मीकि रामायण में राम की सेना के साथ लवकुश के युद्ध का वर्णन मिलता है जबकि रघुवंश में इसका कोई उल्लेख नहीं है ।

रघुवंश के प्रथम राजा है दिलीप जो निःसंतान थे । ऋषि वशिष्ठ उन्हें उनके दुर्भाग्य का कारण बतलाते है इन्द्रलोक से लौटते समय अपनी प्रिय रानी के सम्बन्ध में ही विचारलीन रहने के कारण उत्सुकतावश कामधेनु का उचित सम्मान करना भूल गए जिससे उन्हें उस समय तक निःसंतान रहने का श्राप दे दिया जब तक वे उनकी पुत्री नन्दिनी को अपनी सेवा से प्रसन्न न करले ।

अन्त में उनके यहां रघु का जन्म होता है वे विश्वविजेता होते हैं । रघु अपने पिता का अश्वमेघ यश्र का घोड़ा इन्द्र के द्वारा चुरा लेने पर वह इन्द्र से भी युद्ध करता, है अन्त में इन्द्र उसकी वीरता पर अतिप्रसन्न होते हैं ।

रघु के पिता अज स्वयंवर में विदर्भराज-पुत्री इन्दुमती को प्राप्त करते हैं जो कि वास्तव में एक स्वर्ग की अप्सरा थी जो कर्तव्योल्लंघन के अपराध में उस समय तक पृथ्वी पर निवास करने के लिए विवश थी जब तक वह उस दिव्य हार को स्पर्श नहीं कर लेती है । अनेक वर्षों तक वह अज के साथ सुखपूर्वक रहती है एवं फिर दशरथ नामक पुत्र को जन्म देने पर - (अचानक एक दिन महर्षि नारद की वीणां से छूटकर एक दिव्य हार उसके वक्षस्थल पर आ गिरता है और वह श्रापोन्मुक्त हो जाती है । अज अपनी पत्नी के लिए विलाप करते हैं) यह रघुवंश को अधिक प्रभावशाली बनाता है जो उसकी विशेषताओं में से एक है ।.

इन्हीं अज के पुत्र दशरथ के पुत्र राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न थे । रघुवंश के नवमें सर्ग में दशरथ का राज्यारुढ़ होना, मृगया वर्णन, धोखे से श्रवण कुमार की मृत्यु व पुत्र शोक से सन्तप्त पिता द्वारा राजा को दिए गये श्राप का वर्णन है ।

अगले सर्गो में राजा का पुत्रेष्टि-यज्ञ विधान व चार-पुत्रों के जन्म का उल्लेख है ।

ग्यारहवें बारहवें व तेरहवें सर्ग में हमारी मूल राम कथा को संक्षिप्त रुप में प्रस्तुत किया गया है तेरहवा सर्ग प्रकृतिक चित्रण के लिए प्रसिद्ध है इसमें इन्द्र के पुष्पक विमान से अयाध्या लौटते समय श्री राम सीता को उन सीनों को दिखलाते हैं जहां पर उन्होंने अपने सुख एवं दुःख के दिन व्यतीत किए थे ।

यहां पर कालिदास का प्रकृति प्रेम मुखर हो उठा है । चौदहवें एवं पन्दरहवें सर्ग में राम कके राज्याभिषेक रामराज्य उसके पश्चात सीता का त्याग, सीता द्वारा लव एवं कुश को जन्म देना, राम के द्वारा पकड़ा जाना राम एवं सीता का मिलन एवं सीता का धरती की गोद में समा जाना आदि निहित है ।16 वें सर्ग में राम के दिव्य लोक प्रस्थान करने के पश्चात अयाध्या नगरी का नारी के

रुप में कुशावती के राजा कुश के पास जाकर अपनी दयनीय दशा का वर्णन करने का प्रभावशाली उल्लेख है । अन्तिम तीन सर्गो में 23 राजाओं को वर्णन है जो उस रघुवंश में उल्लेखित पात्र मात्र है।

कवि कालिदास जीवन में कर्तव्य पालन को जीवन को सर्वश्रेष्ठ आदर्श के रुप में प्रतिस्थापित किया है एवं कर्तव्य ही उसके जीवन का सम्पूर्ण नियमन करता है ।

कालीदास के अनुसार युवावस्था का प्रमुख उद्देश्य केवल धनार्जन व संचय होना चाहिए, उसके पश्चात् ही प्रेम का सीन होना चाहिए।

अन्त यानि वृद्धावस्था में मोक्ष की प्राप्ति ही जीवन का अन्तिम लक्ष होना चाहिए । इसी अपने दृष्टिकोण को वे रघुवंश में प्रस्तुत करते हैं ।

शशिवेऽभ्यस्त-विद्यानां यौवने विषयैषिणाम् ।
बुद्धिके मुनवृत्तीनां योगेनान्ते तनुव्यजाम् ॥(1)

अग्निवर्ण नामक अन्तिम राजा के (टी बी) राजयक्ष्मा से दिवंगत हो जाने पर उसकी गर्भिणी महारानी द्वारा राज्य संचालन की बात कह कर कालीदास अपनी कथा को समाप्त कर देते हैं ।

एवं यही पर रघुवंश की समाप्ति हो जाती है ।

कींथ के कथनानुसार रघुवंश में कवि कालीदास के द्वारा जो सूर्यवंश का यशगान किया गया है वह उस समय के गुप्तवंश की कीर्ति का ही चित्रण कहा जा सकता है ।(1)

जो व्यक्ति जितना अधिक विद्वान एवं तेजस्वी तथा सर्वज्ञ होता है उसमें उतनी ही अधिक विनम्रता एवं उदारता भी होती है उसका जीता जागता उदाहरण हमें कवि कालीदास के ग्रन्थ रघुवंश से प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि भारतीय संस्कृति के महान व्याख्याता कवि के

रुप में सरस्वती पुत्र कविकुल-चूड़ामणि को संस्कृत साहित्य रुपी आकाश में निरन्तर प्रकाशित होने वाला सूर्य कहा जा सकता है ।

विद्वान कालीदास को हाराजा विक्रमादित्य के नौ रत्नों में से एक बतलाते हैं ।(1)

धनवन्तरि क्षपणकामर सिंह-शंकु-वेताल भट्ट घटरकरि कालिदासाः

ख्यातौ वराहमिहिरौ, नृपतेः सभायां रत्नाति वैवररु चिर्नव विक्रमस्यः (2)

यदि एक महान कवि अपने काव्य में राम कथा को आधार बनाकर के महाकाव्य का सृजन करते है तो इसका मतलब यह होता है कि राम कथा निःसंदेह ही बहुत ही अधिक प्रचलित एवं प्रभावशाली और ऐतिहासिक भूतकालीन सुगठित कथा थी ।

कालिदास के पश्चात कवि भट्ट ने अपने काव्य में राम-कथा को आधार बनाकर "रावण-वध" महाकाव्य की रचना महाराज श्रीधर सेन के राज्य काल में सौराष्ट्र की तलनी नामकी नगरी में की थीं जो कि श्रीधर सेन द्वितीय के समय कालीन थे क्योंकि उनके समय में ही 610 ई. के शिलालेख में देने का वर्णन मिलता है ।

कवि भट्टि जिन्हें व्याकरण शास्त्र का बहुत अधिक ज्ञान था । एवं उनका मूल उद्देश्य भी जन सामान्य एवं विद्यार्थियों को व्याकरण का पूर्ण ज्ञान प्रदान करना एवं विभिन्न अलंकार व पहुँचाना था । वे व्याकरण में पाणिनी के अनुयायी थे । उन्हें "व्याकरण शास्त्रोपदेशी कवि" (4) कहा जाता था ।

"रावण-वधम्" को भट्टि काव्य के नाम से भी जाना जाता है । इसमें कुल 22 सर्ग एवं 1624 श्लोक है । इसमें कवि भट्टि ने महर्षि विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण के असुरो के संहार के लिए वनगमन की घटना से आरम्भ किया है । यह कथा 4

काण्डों में विभाजित की गई है -

1. प्रकीर्ण काण्ड
2. अधिकार काण्ड
3. प्रसन्न काण्ड
4. तिडन्तः काण्ड

(1) प्रथम काण्ड :- प्रकीर्ण काण्ड में 5 सर्ग हैं जिनमें राम के जन्म से लेकर सीता हरण तक की कथा को काव्यात्मक रुप में प्रस्तुत किया है । कवि ने प्रथम चार सर्गो में अपने कवि स्वरुप को अधिक मुखर रुप में प्रस्तुत होने दिया है उनमें उनका व्याकरण शास्त्री स्वरुप गौरग हो गया है ऐसा पाठक को महसूस होता है ।

पंचम सर्ग में भट्टि को अपना व्याकरण स्वरुप प्रस्तुत करने हैं जहां पर उनके द्वारा '2' प्रत्यय एवं आमधिकार के प्रयोगों का संकेत मिलता है । इस काण्ड का चित्रण कवि ने काफी संजीवता के साथ किया है ।

(2) द्वितीय काण्ड को अधिकार काण्ड कहा जाता है इसमें 4 सर्ग है जिनमें सुग्रीव सीता की खोज, अशोक वाटिका विध्वंस तथा पवनपुत्र हनुमान जी की वीरता व पराक्रम की यशोगाथा है इसमें कुछ पद्य प्रकीर्ण भी सम्मिलित हैं ।

व्याकरण शास्त्र की दृष्टि से इनमें दुह, याच, पचि, आदि द्विकर्मक धातुओं के प्रयोगों तथा तच्छीलह प्रयोग भाव तथा कर्तरि प्रयोग आत्मने पदाधिकार एवं अनभिहि ने सूत्राधिकार के प्रयोगों को प्रस्तुत किया है ।

(3) तीसरे अर्थात प्रसन्न काण्ड में भी 4 ही सर्ग है । जिनमें सीता भिज्ञान दर्शन प्रातः कालीन सौन्दर्य का वर्णन विभीषण का आगमन राम के द्वारा समुद्र पर पुल बांधने आदि का वर्णन है ।

इसमें भट्टि ने अपने सभी अर्थात चारों सर्गों में अपने अलंकारिक एवं शास्त्रीय ज्ञान से पाठकों को चमत्कृत किया है । भट्टि न शब्दालंकार एवं अर्थालंकार के साथ-साथ माधुर्य का भी अनोखा मिश्रण किया है ।

अन्तिम सर्ग में श्लेष का भाषासम नामक भेद का प्रयोग दिकाई देता है ।

(4) अन्तिम काण्ड तिडन्त काण्ड - इसमें 8 सर्गों में ग्रहस्त, कुम्भकर्ण संहार, रावण विलाप रावण वध विभीषण विलाप, विभीषण का राज्याभिषेक की कथा· का वर्णन है ।

इसमें कवि भट्टि ने व्याकरण प्रयोगों की दृष्टि से आवश्यक नौ सर्गों में नौ लकारों (लिट, लुङ, लृट, लङ, लिङ, लोट, लृङ तथा लुट्) का वर्णन किया है ।(1)

कुछ विद्वान जो कि समीक्षक भी है इसको शास्त्र काव्य भी कहते है, साथ ही कहा जाता है कि व्याकरण शास्त्र के ज्ञान भी कहते है, साथ ही कहा जाता है कि व्याकरण शास्त्र के ज्ञान से अनभिज्ञ व्यक्तियों के लिए यह काव्य शास्त्र उसी प्रकार अनुपयोगी है जैसे अन्धे व्यक्ति के हाथ में दीपक अथवा मशाल दे दी जाए तो भी वह उसका महत्व नहीं समझ सकता है ।(2)

कवि भट्टि ने अपनी इस बात की पुष्टि भी स्वयं ही की है।

दीपतुलय प्रबन्धोऽयं शब्द लक्षणचक्षुणाम् ।
हस्तादर्श इवान्धाना भवेद् व्याकरणादते ।।(3)

अलंकार चित्रण का उदाहरण -

न तज्जलं यन्न सुचारुपंकज न
पंकंजं न धय लीन षट्पद्म
न षदपदौऽसौ न जुगुञ्ज यः कलं न गुंजितं
तन्न जहार यन्मनः ।।

भट्टि का ज्ञान सागर के समान विशाल था पाठक जितना भी उनके काव्य का अध्ययन करता है वह उतनी अधिक गहराई से डूबता ही चला जाता है ।

उनके व्याकरण को प्रदर्शित करने वाले निम्न उदाहरण यहां आवश्यक एवं उपयुक्त प्रतीत होते हैं -

सोऽध्यैष्ट वेदांस्त्रिदशानयष्ट पितृनसार्प्सीत सममंस्त बन्धुन् ।
व्यजेष्ट षड्वर्गमरंस्त नीतौ समूलधातं न्यवधीदरींश्च ।।

इस पद में, (1) अध्येष्ट अयष्ट अतार्प्सीत सममंस्त व्यजेष्ट अरस्तन्यवधीत आदि क्रियाएं सामान्य भूत लुङ् लकार की है । परस्मैपदी व आत्मनेपदी दोनों प्रकार की धातु के रुप में प्रस्तुत है -

बलिर्बबन्धे जलधिर्ममन्थे
जह्रेऽमृतं, दैत्यकुलं विजिग्ये ।
कल्पान्तदुस्थाः वसुधा तथोह,
येनैव भारोऽतिगुरुन तस्थे ।।

कवि भट्टि के पश्चात् राम कथा को अपने महाकाव्य में सीन देने वाले कवि कुमार दास माने जाते हैं जो कि संस्कृत साहित्य के देदीप्यमान सितारे के रुप में प्रतिष्ठित हैं ।

ये मूलरुप से लंका के निवासी थे जिसे सिंहलद्वीप भी कहा जाता है ।

इनके बारे में यह कहा जाता है कि ये कालीदास के अनन्य भक्त थे अतः कालीदास के रघुवंश का ही प्रभाव इनके काव्य पर स्पष्ट दिखाई देता है । ये लंका के राजा भी थे एवं 517 ई से 526 तक कुमारदास ने वहां शासन किया था ।

रघुवंश के बाद कुमारदास ही ''जानकी-हरण'' की रचना करने

में समर्थ थे ऐसा कहा जाता है ।(1)

जानकी हरणम् -

इस महाकाव्य में रामायण की पूरी कथा प्राप्त होती है फिर भी कुमार दास ने अपने काव्य का नाम् - ''जानकी-हरणम्'' क्यों रखा उसके सन्दर्भ में यह कहा जाता है कि उन्होंने अपने काव्य में सीता हरण की कथा को केन्द्र में रख कर अपने काव्य का सृजन किया है अतः इसे जानकी हरणम के नाम से पुकारा गया है, साथ ही साथ राजशेखर-रघुवंश के उपस्थित रहते हुए जानकी हरण करने या रचने का सामर्थ्य या तो कुमारदास में था या रावण में था । यह कार्य कुछ समय तक अधूरा रहा और इसको कालीपद बाबू ने पूरा किया ।

इन सर्गो में इस प्रकार रा कथा निहित है -

1. प्रथम सर्ग - राजा दशरथ का आरम्भ से वर्णन अयोध्या नगरी एवं राजा दशरथ की तीनों रानियों का वर्णन ।

2. द्वितीय वर्ग - देवताओं द्वारा भगवान विष्णु के पास रावण से पराजित होने के वृत्तान्त का वर्णन एवं उनकी अवतार लेने वाली प्रतिज्ञा का उल्लेख आदि है ।

3. तृतीय सर्ग - ऋतु वर्णन प्रातः सन्ध्या, दशरथ की क्रिडाओं का वर्णन ।

4. चतुर्थ सर्ग - श्री राम का कौशल्या के गर्भ में प्रवेश एवं श्री राम जन्म की कथा ।

5. पंचम सर्ग - इसमें महर्षि विश्वामित्र के साथ श्रीराम व लक्ष्मण का ऋषियों को राक्षसों के त्रास से मुक्त करवाने हेतु वन गमन व सुबाहु ताड़का वध का वर्णन ।

6. षष्ठ सर्ग - में मिथिला नगरी का वर्णन राम एवं सीता का पूर्वराग तथा देवि स्तुति तथा श्री राम के द्वारा शिव धनुष भंग का वर्णन ।

7. सप्तम सर्ग - राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न आदि का विवाह वर्णन ।

8. अष्टम सर्ग - राम एवं सीता का अनुराग एवं स्नेह वर्णन।

9. नवम सर्ग - अयोध्या लौटते समय मार्ग में युद्ध ।

10. दशम सर्ग - श्री राम को वनवास भरत का ननिहाल से लौटते समय का वर्णन, राम भरत मिलन, रामसीता लक्ष्मण का चित्रकूट निवास एवं अन्त में सीता हरण जो कि इस काव्य को रचने का प्रमुख उद्देश्य रहा है ।

11. एकादश सर्ग - वर्षावर्णन, रावण-जटायु युद्ध, सुग्रीव को वानरों का राजा बनाना आदि ।

12. द्वादश सर्ग - शरदऋतु का वर्णन सुग्रीव का अपने कर्तव्य से विमुख होना सुग्रीव के पास लक्ष्मण का जाना व लंका के लिए प्रस्थान ।

13. त्रयोदश सर्ग - राम का सीता वियोग वर्णन सुग्रीव के द्वारा श्री राम को सान्त्वना दिया जाना ।

14. चतुदर्श सर्ग - सेतुबन्ध व सेना का लंका में प्रवेश आदि है ।

15. पंचदश सर्ग - राम का रावण को संदेश व अंगद नामक (बालिपुत्र) दूत भेजना ।

16. षोडश सर्ग - इसमें राक्षसों का ही वर्णन है ।

17. सप्तदश से बीस तक के सर्गो में - कवि ने उन सर्गों में राम व रावण केयुद्ध का वर्णन किया है विभिन्न चरणों में युद्ध व उसके योद्धा के वर्णन के साथ अन्त में श्री राम की विजय का वर्णन किया है ।

महाकवि कालिदास के ही समान कवि कुमार दास ने भी वैदर्भी रीति में काव्य का सृजन किया है ।

अनुप्रास कवि कुमारदास का सर्वाधिक प्रिय अलंकार है । कवि के उत्प्रेक्षा रुप में कई पद्य प्रसिद्ध हैं जिनमें से एक यहां उद्यत है-

प्रालेय काल प्रिय विप्रयोग
गलानेव व रात्रिः दाय मास साद ।
जगाय मन्दं दिवसो वसन्त क्रूर
रातप श्रान्त इव क्रमरेण ॥

कवि कुार दास में परवर्ती कवियों के अनुसार कालिदास की सरलता एवं प्राञ्जलता तथा भारवि एवं भट्टि की वर्णन कौशलता को एक साथ प्राप्त किया जा सकता है । भट्टि निःसंदेह एक सफल महाकाव्य के लेखक कहे जा सकते हैं ।

इसके पश्चात प्रवरसेन का नाम रामकथा को अपने काव्य में स्थान देने वाले कवियों में आता है ।

इनका महाकाव्य महाराष्ट्रीप्राकृत का सर्वप्रथम महाकाव्य माना जाता है । जिसको प्रवरसेन ने ''सेतुबन्ध'' नाम प्रदान किया था ।

कुछ समीक्षक उसे रावण वध या दशमुख-वध भी कहते हैं ।

इसको प्रवरसेन ने 15 आश्वासों में परिपूर्ण किया है ।

डा. सुधीर कुमार गुप्त

इनका समय ई. की छठी शताब्दी मानते है । दण्डी के मतानुसार सेतुबन्ध सुक्तिरत्नों का सागर कहा गया है ।

बाणभट्ट ने भी सेतुबन्ध की कुक्त कण्ठ से प्रशसा की है ।

सेतुबन्ध का कथानक रामायण पर ही आधारित है । इसमें कवि ने ुख्य रुप से समुद्र पर पुल बन्धने से लेकर रावण के वध तक के कथानक को चतुरता से विस्तार से दिया है । उस काव्य में प्रसाद गुण सर्वत्र दिखाई देता है ।

प्रवरसेन के काल में राजा लक्ष्मण सेन द्वारा वितस्ता नदी पर पुल बनाया गया था कवि ने उस पुल का ही व्यजना से वर्णन करते हुए रामायण को आधार बनाया है ।

प्रवरसेन के पश्चात भर्तुमेष्ठ को रामकथा से सम्बन्धित कवि के रुप माना जाता है ।

डॉ. रामजी उपाध्याय के अनुसार यह कहा जाता है कि श्रीराम के चरित्र से सम्बद्ध किसी - सर्गात्मक महाकाव्य का रचनाकार भी उन्हें माना जा सकता है । क्योंकि इका नाम भी राम विषयक काव्यों के लेखकों मे परिगणित होता है ।

इनकी भाषा सरल सरस मनोहर एवं प्रवाहशील है ।

कविराज का मूलनाम माधनवभट्ट था । ये कादम्बवंश के राजा कामदेव (1182-1197) ई. के आश्रित थे जिनकी राजधानी का उस समय का नाम जयन्तपुरी था जो वर्तमान कर्नाटक का जयन्त क्षेत्र कहलाता है ।(1)

''राघवपाण्डवीयम्'' रचना जो कि अपने नाम से ही अद्‌भुत, प्रथीत होती है वास्तव में अपने आप में अप्रतीत रचना है । इस महाकाव्य में प्रत्येक श्लोक में श्लेष अलंकार द्वारा रामायण एवं महाभारत

की कथा का साथ-साथ प्रणयन किया गया है । इस महाकाव्य की चमत्कारिकता से प्रभावित होकर परवर्ती अनेक महाकवियों ने उस प्रकार के ग्रन्थों की रचना की प्रेरणा ग्रहण की थी ।

इसके एक पद्य से इसका भाव स्पष्ट हो जाता है ।-
नृपेण कन्यां जनकेन दित्सिसामयोनिजां लक्ष्भयितुं स्वयंवरे ।
द्विज प्रकर्षेण स धर्मनन्दनः सहानुजस्ता भुवमप्यनीयता ।।
इस प्रकार एक ही पद्य में श्लेष कितना सरल है ।

प्रथम अर्थ राम के तात्पर्य में लिया जाता है -

राजा जनक के द्वारा दी जाने वाली अयोनिजा सीता को स्वयंवर में प्राप्त करने के लिए द्विज प्रकर्ष विश्वामित्र के द्वारा धर्मनन्दन श्री राम लक्ष्मण सहित मिथिला को लाए गये ।

द्वितीय अर्थ में महाभारत के अनुसार -

धर्मपुत्र युधिष्ठिर अपने छोटे भाइयों के साथ द्विज प्रकर्ष वेद-व्यास के कथनानुसार अयोनिजा द्रौपदी को प्राप्त करने के लिए स्वयंवर में द्रुपद राजा के यहां पांचाल देश गए । इस प्रकार प्रत्येक पद्य में दोनों अर्थ निकलते है। चमत्कार प्रधान द्वयर्थाक काव्यों में ''राघवपांडवीय'' हत्वपूर्ण रचना मानी जाती है । इसमें 13 सर्ग हैं तथा कुल 668 पद्य हैं ।

इनकी भाषा श्लिष होने पर भी पांजल एवं आकर्षक है । करिराज वक्रोक्ति के प्रभावशाली चित्रकार थे ।

इनके पश्चात हरिदत्त सुरी का राघवनैषधीयम (राम व नल की कथा) पार्वती रुक्मणीयम् - पार्वती व रुक्मिणी की कथ विद्या माधव द्वारा रचित । वैकटाध्वरि का यादवराघवीयम् आदि इसी प्रकार की रचनाएं हैं ।(1)

इसके पश्चात कुछ संस्कृत नाटकों में भी राम कथा को आधार बना करके रचना की गई है जिनमें महाकवि भास भी सम्मिलित हैं उन्होंने मुख्य दो नाटक लिखें हैं ।

1. प्रतिभा - इसमें 7 अंक है तथा राम के वनवास से लेकर राज्याभिषेक पर्यन्त की घटना वर्णित है ।

भरत को अपने नाना के यहां से लौटते समय एक स्थान मिलता है जहां पर उसे अपने पूर्वजों की प्रतिमाएं सुरक्षित रखी हुई दिखाई दी वही अचानक उसे अपने पिता की दशरथ की प्रतिमा दिखाई देती है जिसे देख कर वह चौंक उठता है ।

शेष कथा रामायण पर आधारित है । कवि प्रतिमा संदर्शन के कारण ही उसका नाम प्रतिमा नाटक रखता है ।

अभिषेक - उस नाटक में भी 7 अंक है इसमें बालिवध से राम के राज्याभिषेख की घटना का वर्णन है । इसमें संक्षेपत वर्णित है ।

महाकवि कालीदास से पूर्व के माने जाते हैं क्योंकि कालीदास ने अपने नाटक ''मालविकाग्निमित्र'' में कवि भास का उल्लेख किया है ।

भवभूति-संस्कृति नाट्य साहित्य में भवभूति का अप्रतिम स्थान है ये करुण रस के सिद्ध हस्त कवि माने गये हैं ।

उन्होंने भी रामायण पर आधारित नाटकों का सृजन किया था।

महावीर चरित - इसमें 7 अंक है एवं रामायण का पूर्वार्द्ध (अर्थात श्री राम के विवाह से लेकर राज्याभिषेक पर्यन्त की कथा वर्णित है । रावण को इसमें उन्होंने शुरु से ही खलनायक प्रदर्शित किया है । जो कि हमेशा राम के विरुद्ध सबको उकसाता रहता है वह श्री

राम के विनाश के लिए ही सदैव विचारशील रहता है अनेकों षड्यन्त्रों की रचनाएं करता है । जब श्री राम शिव जी का धनुष भंग करते हैं तब वह परशुराम जी को उकसाता है, शूर्पणखा के माध्यम से मन्थरा को उकसाता है एवं राज्याभिषेक में विघ्न उपस्थित करता है।

बालि के युद्ध का कारण भी रावण ही है क्योंकि वह रावण का मित्र था । अन्त में रावण का वध करके श्री राम अयोध्या आते हैं एवं फिर उनका राज्याभिषेक होता है ।

भवभूति के नाटक पर महाकवि भा, का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है ।

उत्तर रामचरित - इस नाटक में कवि भवभूति ने भगवान श्रीराम के जीवन के उत्तरार्द्ध की घटनाओं से सम्बद्ध है ।

इस कथानक के अनुसार राम का राज्याभिषेक के बाद सभी मेहमानों के जाने के समय अर्थात जनक जी एवं सभी ऋषिगण के जाने के बाद जब मुनि ऋष्यश्रृंग के द्वादशवर्षीय यज्ञ में भाग लेने के लिए उनके द्वारा आमंत्रण प्राप्त करने पर कौशल्या सुमित्रा कैकयी तीनों माताओं को भी वशिष्ठ एवं माता अरुन्धती के साथ जाना पड़ता है ।

पिता जनक के जाने से गर्भवती सीता स्वाभाविक रुप से खिन्न होती है जिन्हें सान्त्वना देने के लिए श्री राम राज्यसभा से अन्तःपुर में आते हैं ।

यहीं से कवि भवभूति ने कथा को आरम्भ किया है ।

"राम-सीता" के मनोरंजन का प्रयास करने का प्रयत्न करते हैं । उन्हें मुनि श्री अष्टावक्र आकर प्रजा के प्रति उनके कर्तव्य का स्मरण करवाते हैं ।

लक्ष्मण जी चित्रशाला के पूरी हो जाने की सूचना देते हैं जिस में श्री राम के भूतकाल की घटनाओं का चित्रण किया गया है । चित्रों को देखकर दुःखी सीता वन दर्शन की इच्छा व्यक्त करती है । एवं थक करके सो जाती है ।

सीता के सोने के पश्चात राम का दुर्मुख नामक सेवक सीता से सम्बन्धित लोकोपवाद की सूचना देता है जिसे सुनकर विवश होकर राम को सीता का त्याग करना पड़ता है एवं सीता निर्वासित हो जाती है, प्रथम अंक में इन्हीं घटनाओं का विवरण है ।

दूसरे अंक में कवि सारी घटनाओं को 12 वर्ष पश्चात की अवस्था में वर्णित करता है ।

इनमें सीता द्वारा लव-कुश नामक पुत्रों की उत्पत्ति, वाल्मीकि का रामायण लिखने का तात्पर्य एवं प्रयोजन श्री राम द्वारा स्वर्ण प्रतिमा स्थापित करे अश्वमेघ र्य करना व श्र ीराम को शम्बूक नामक शूद्र तपस्वी के वध के लिए वन आगमन की सूचना मिलती है ।

तीसरे अंक में राम का पंचवटी में भ्रमण व सीता के विरह में विलाप करना प्रमुख घटना है जबकि सीता वहां विद्यमान है ।

श्री राम का इस स्थान पूर्व स्मृति से उत्पीड़ित होकर बार-बार मूर्च्छित होना करुणा उत्पन्न करता है सीता उन्हें पुनः संज्ञा प्रदान करती है ।"

इस अंक को करुण रस की सजीव प्रतिमा कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

अगले अंक में जनक व कौशल्या का मिल सीता को याद कर दुखी होना, अश्वमेघ यज्ञ के अश्व की रक्षा हेतु चन्द्रकेतु का घमंड पूर्वक कहे गये वचन एवं लव द्वारा घोड़े के पकड़ने की घटनायें निहित हैं ।

पंचम अंक में लव एवं चन्द्रकेतु का विवाद होता है ।

छठे अंक में कुश एवं चन्द्रकेतु के भीषण युद्ध का समाचार विद्याधर एवं विद्याधारी के आपसी वार्तालाप से ज्ञात होता है । श्री राम शम्बूक को मारकर वहां आते हैं तथा लव कुश को उनके चेहरे मोहरे) से पहचानते हैं ।

सप्तम अंक में वाल्मीकि रामायण का आयोजन करते हैं ।

उसमें सीता के त्याग का दृश्य दिखाया जाता है राम इसे देख कर मुर्च्छित हो जाते हैं सीता प्रकट होती है एवं श्री राम को होश में लाती हैं श्री राम सीता को पुनः ग्रहण करते हैं . यही पर भवभूति ने नाटक को समाप्त कर दिया है ।

यहां पर नाटककार ने मूलकथा में कई परिवर्तन करके उसे सुखान्त कर दिया है जबकि वास्तविक कथा का अन्त दुखान्त है क्योंकि अग्नि परीक्षा के पश्चात भी सीता का त्याग हुआ था अतः वे लवकुश को श्री राम को सौंप पुनः उसी भूमि में समा जाती है जहां से वे जनक जी को मिली थी ।

मूलकथा में चन्द्रकेतु एवं लवकुश के बीच किसी भी प्रकार का युद्ध नहीं होता है । परन्तु यहां उसे चित्रित करके स्वाभाविकता का समावेश किया है ।

इस नाटक में करुण रस का परिपाक पूर्णतः हुआ है । इस नाटक मं अधिक करुणा उत्पन्न करने के लिए सीता को उस समय निर्वासित किया गया है जब वे अपना गर्भकाल पूर्ण कर चुकी थी असह्य प्रसव वेदना के कारण वे गंगा की गोद में कूद जाती हैं वही पर लव व कुश का जन्म होता है । पंचवटी में राम को उपस्थित करके भूतकाल की सुखद व दुखद् दोनों ही स्मृतियों के कारण राम का विलाप करना करुणा उत्पन्न करता है क्योंकि उस समय तिरस्कृत सीता भी दूसरी और विद्यमान थी जिसका उन्हें पता नहीं था । राम

के करुण रस को भवभूति इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं -

अनिर्भिन्नो गंभीरन्वादन्तर्गूढ़ धन व्यथः ।
पुटपाक प्रतीकाशो रामस्य करुणा रसः ॥

सीता के परित्याग के उपरान्त वासन्ती राम को उलाहना देती है -

त्वं जीवितं त्वमसि में हृदयं
द्वितीयं त्वं कौमुदी नयनयोरमृत त्वमंगे ।
इत्यादिभिः प्रियुशनैरनुरुध्य मुग्धां
नामेव शान्तमधवा किमतः परेण ॥

कहा जाता है भूवभूति रसं निरुपण में सिद्ध हस्त थे । उनके महावीर चरित में वीर रस एवं उत्तर राम चरित में करुण रस की अभिव्यक्ति हुई है । इसलिए किसी ने कहा भी है -

''उत्तर रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते''

उत्तर रामचरित में रस की मधुरता नाटकीय चमत्कारिता एवं कला की चारुता का अपूर्व समन्वय है साथ ही विभिन्न नवीनताओं के साथ पुरातन कथा को नवीन रुप प्रदान किया है ।

रामायण के आधार पर लिखे गये नाटकों में मुरारि का ''अनर्घराघव'' एक प्रसिद्ध नाटक है । ये भवभूति के परवर्ती थे इनका समय 750 से 800 माना जाता है । मुरारि के नाटक ''अनर्घराघवम्'' में 7 अंक है । महर्षि विश्वामित्र द्वारा यज्ञ रक्षार्थ राम-लक्ष्मण की दशरथ से याचना से लेकर राम के राज्याभिषेक पर्यन्त की रामायणी कथा का रोचक ढंग से प्रस्तुत की गई है ।

हर नाटक कार की तरह से मुरारि ने भी अपनी कल्पना से कथा में कुछ परिवर्तन कर दिया है ।

1. बालि का वध राम ने छिप कर नहीं प्रकट होकर किया । यहां बालि उत्तेजित होकर राम से संग्राम करता है सुग्रीव से नहीं।

यहां मुरारि ने वीररस को प्रधानता दी है ।

2. परशराम से संग्राम के लिए उद्यत राम के धनुष की टंकार पर सीता विचित्र कल्पना करती है ।

3. कबन्ध, लक्ष्मण, युद्ध व गृह की रक्षा के विषय में भी कवि की नवीन कल्पनाएं हैं ।

मुरारि के पश्चात राजशेखर का नाम लिया जाता है । ये महाराष्ट्र में उत्पन्न होने पर भी धन व यश प्राप्ति के उद्देश से ये महाराष्ट्र से निकलकर कन्नौज चले गये थे ।

उन्होंने अपने नाटक बारामायण की रचना की । इसमें 10 अंक है, यह रामायण पर आधारित है ।

इसके प्रथम तीन अंको राजा जनक के धनुष यज्ञ एवं रावण के व्यक्तित्व का वर्णन है । रावण का मिथिला आना, महर्षि परशुराम से सहयोग प्रार्थना करना, परशुराम द्वारा मना किये जाने पर वह दुःखी होता है । राम व सीता के विवाह को देख-देख कर दुखी होता है ।

चौथे अंक में राम एवं परशुराम के वार्तालाप का उल्लेख है । पांचवे एवं छठे अंक में रावण शूर्पणखा की सहायता से सीता हरण करने में सफल हो जाता है ।

सातवें या अगले अंक में राम द्वारा समुद्र पर पुल बनाकर लंका पवेश करना ।

आठवें अंक में परस्पर युद्ध एवं नवमें अंक में राम एवं रावण के युद्ध का वर्णन है जो कि इन्द्र के द्वारा करवाया गया था ।

दशम अंक में राम लक्ष्मण व सीता आदि सभी पुष्पक विमान से अयोध्या की ओर प्रस्थान करते हैं । इस नाटक में रावण का प्रभाव अधिक दिखाया गया है उसी से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन, राम से सम्बन्धित घटनाओं की अपेक्षा अधिक दिखाई देता है ।

कुन्दमाला नामक नाटक भी रामायण की कथा पर ही आधारित है । इसके नाटककार का नाम दिङ्नाग है जिनका समय 1000 ई. से माना जाता है । इस नाटक पर भवभूति के उत्तर रामचरित का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है ।

इसमें 6 अंक है । राम के राज्याभिषेक के पश्चात सीता का परित्याग एव राम के पुनर्मिलन तक की घटनाओं का वर्णन है ।

कवि ने अपनी प्रतिभा को प्रकृति चित्रण के माध्यम से व्यक्त किया है ।

आश्चर्य चूड़ामणि नामक नाटक के लेखक श्री शक्तिभद्र आद्य शंकराचार्य के शिष्य माने जाते हैं ।

यह नाटक भी रामायण पर ही आधारित है । इसमें शूर्पणखा प्रसंग से लेकर सीता की अग्नि परीक्षा तक की कथा का वर्णन है।

यह अद्‌भुत रस की वैदर्भी रीति में रचित उत्कृष्ट नाटक है ।

इसे उत्तर राम चरित के बाद श्रेष्ठ नाटक कहा गया है । इसके लेखक क़ा समय 788 से 820 रहा है ।(1)

नवमीं शताब्दी के प्रसिद्ध नाटककार दामोदर मिश्र ने हनुमन-नाटक की रचना की । यह रचना भी रामायण पर ही आधारित नाटक है ।

इसमें 14 अंक़ है । इसकी रचना में लेशमात्र भी प्राकृत का प्रयोग नहीं मिलता है ।

कुण्डिनपुर के निवासी कवि जयदेव (गीतगोविन्द वाले नहीं) का समय 1200 ई.(1) के लगभग रहा है । इनकी नाट्य रचना प्रसन्न राघव भी रामायण पर आधारित है । नाटककार ने अपने अनुसार कई मौलिक परिवर्तन किये हैं जिनसे उनकी साहित्यिक प्रतिभा का प्रदर्शन हुआ है ।

इस प्रकार संस्कृत साहित्य में राम कथा की परम्परा चली आ रही है इसके पश्चात हिन्दी साहित्य में रामकथा की परम्परा को देखने पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है ।

1. मानव पूर्ववर्ती राम काव्य धारा

2. मानस परवर्ती राम काव्य धारा

1. मानस पूर्ववर्ती राम काव्य धारा में -

	रचना	रचयिता	रचनाकाल
1.	रामचरितरामायण भूपति		1342 वि.
2.	रामायन कथा	गो. विष्णुदास	1492 वि.
3.	रावणमन्दोददरी संवाद	मुनिलावप्यकृत जन रामकथा	1500 वि.
4.	भरतमिलाप	ईश्वरदास	1555 वि.(1)
5.	अंगदपैज	ईश्वरदास	1555 वि.
6.	रामसीताचरित्र	ईश्वरदास	1580 वि.
7.	हनुमानचरित्र	सुन्दरदास	1616 वि.
8.	हनुमानचरित्र	ब्रह्मरायमल्लजैन	1616 वि.
9.	हनुमच्चरित्र	रायमलपाण्डे	1616 वि.
10.	रामचरित्र या रामरास (ब्रह्म)	जिनदास	1616 वि.

उपर्युक्त रचनाओं को क्रमानुसार कालक्रम के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना जाता है परन्तु इनमें से ''रामायन'' कथा को छोड़कर कोई भी रचना ऐसी नहीं कही जा सकती जो प्रबन्धात्मक रामकाव्य धारा की जागृत चेतना को स्पष्ट करने में समर्थ कही जा सके ।

आचार्य रामचन्द्रशुक्ल के शब्दों को उद्धृत करना आवश्यक प्रतीत होता है -

रामभक्ति का वह परम विशद साहित्यिक संदर्भ इन्ही भक्त शिरोमणि द्वारा संघटित हुआ जिसमें हिन्दी काव्य की प्रौढ़ता के युग का आरम्भ हुआ ।(1)

मध्यकाल में आगे चल कर रामभक्ति को लेकर धार्मिक उपासना का जो क्रमिक विकास हुआ, उससे प्रेरणा लेकर रामभक्ति को आधार बनाकर धार्मिक उपासना का जो विकास हुआ उसके बाद रामकाव्यों के लिए पृष्ठभूमि तैयार की ।

हिन्दी रामकाव्य का पूर्ण विकास याने के सम्पूर्ण (साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा भक्तिविषयक) विकास, सरल परन्तु सौष्ठवपूर्ण भाषा में जो कि जन सामान्य की आकांक्षाओं को पूर्ण करने में सफल होता है केवल तुलसीदास जी कृत रामचरित मानस में ही मिलता है ।

अन्य रचनाएं उस स्तर की नहीं हैं परन्तु साहित्यिक रुप से हम उनको अनावश्यक भी नहीं कह सकते हैं । उन सभी का महत्व अपने-अपने स्थान पर साहित्यिक योगदान देने में सफल है । मानस-परवर्ती काल में रचित प्रबन्धात्मक रामकाव्य धारा की रचनाओं को काल-क्रमानुसार इस प्रकार रखा जा सकता है -

रचना		रचनाकार	रचनाकाल
1.	राम अवतार लीला	मलूकदास	कवि का जन्म स.1631 तथा मृत्यु 1739 वि. माना गया है (1)
2.	रामललानहछू	गोस्वामीतुलसीदास	स. 1640 वि.
3.	राम प्रकाश रामायण	मुनिलाल	स. 1642 वि.
4.	जानकीमंगल	गो. तुलसीदास	स. 1643 वि.
5.	राम चन्द्रिका	केशवदास	स. 1658 वि.
6.	गुणरामरासौ	माधवदास चारण	स. 1675 वि.
7.	रामायण	कपूरचन्द्र	स. 1700 वि.
8.	हनुमानदूत	पुरुषोत्तम	स. 1701 वि.
9.	सीताचरित्र	राईचन्द्र	स. 1713 वि.
10.	अवधविलास	लालदास	स. 1732 वि.
11.	अंगदपर्व	लालदास	स. 1732 वि. आसपास
12.	अवतार चरित्र	बारहट नरहरिदास	स. 1733 वि.
13.	रामावश्वमेघ	नारायणदास (उग्र)	स. 1739 वि.
14.	गोविन्दरामायण	गुरुगोविन्दसिंह	स. 1755 वि.
15.	अवधसागर	जानकीरसिक शरण	स. 1760 वि.
16.	सीतायन	रामप्रियाशरण	स. 1760 वि.
17.	रघुवंशदीपक	सहजराम	स. 1789 वि.
18.	रामायण	भगवंतरायखींती	स. 1784 वि.
19.	रामचरित	रामाधीन	18वीं शती का उत्तरार्द्ध
20.	रायण	चन्द्रकवि	18वीं शती की रचना
21.	रामरसामृतसिन्धु	स्वामीकृपानिवासजी	1835 के आसपास
22.	रामस्वयंवर	राजारघुराजसिंह	स. 1934 वि.

विदेशी साहित्यों में भी तिब्बती रामायण, खोतानीरामायण, रामायणकाकाविन, चरितरामायण, हिकायतसरिराम, रामकेलिंग सरतकाण्ड, पातानी रामकथा, रे आमके इ राम क्रिये, रामजातक, रामयागन, यामप्वे आदि में भी रामकथा विविध रुपों में उपलब्ध होती है ।

भक्ति युगीन रामकाव्य की प्रवृत्ति के अन्तर्गत हम जब भी विचार विमर्श करेंगे हमें सर्वप्रथम गो. तुलसीदास जी का नाम लेना होगा।

उन्होंने रामचरितमानस, रामललानहछू, रामाज्ञाप्रश्न, जानकीमंगल, पार्वतीमंगलगीतावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका, बरवयरामायण, दोहावली, कवितावली, हनुमानबाहुक, वैराग्यसंदीपनी सतसई, कुण्डलियारामायण, अंकावली, बजरंगबाण, बजरंगसाठिका, भरतमिलाप, विजयदोहावली, ब्रह्मरुपनिकास, छनदावलीरामायण, छप्पयरामायण, धर्मराय की गीता, ध्रुवप्रश्नावली, गीताभाषा, हनुमानस्रोत, हनुमानचालीसा, हनुमानपंचक, ज्ञानदीपिका, राममुक्तावली, पदवंदरामायण, रसभूषण, साखी तुलसीदास जी की संकटमोचन, सत-उपदेश सूर्यपुराण, तुलसीदासजी की बानी उपदेश दोहा आदि नाम उल्लिखित किये जाते हैं ।

अग्रदास-अष्टयाम, ध्यानमञ्जरी, रामध्यानमञ्जरी, कुण्डलियां अथवा हितोपदेश, उपखाण्डा वामनी आदि । ये अग्रदास जी रामभक्ति के प्रसिद्ध ग्रन्थ अष्टयाम के प्रणेता के अलावा नाभादास जी के गुरु भी थे ।

नाभादास-भक्तमाल । रामचरितसंग्रह । इन्होंने रामभक्ति में ज्ञान की उपेक्षा मधुरोपासना का अनुमोदन किया था । रामभक्ति परम्परा के अन्तर्गत जो मधुरोपासना का विकास हुआ उसमें यह अग्रलाली के नाम से भी प्रसिद्ध थे क्योंकि इस परम्परा में अली शब्द की छाप प्राचीनतम है-अष्टयाम की कुछ पंक्तियां यहां उद्धत हैं -

देखी झूलत राछोडोल,
जनकसुता लीने संग सोभित गौर स्याम तन लोल ।

हीरा पन्ना लालफिरोजा रतन खचित बेमोल,
कीडत रामजानकी दोउ बजै दुन्दुभी ढोल ॥

नाभादास - अग्रदास जी के सर्वप्रमुख शिष्य के रुप में उल्लिखित किये जाते हैं । इनकी भक्तिावना व सिद्धि से प्रभावित होकर इनके गुरु ने इन्हें भक्तमाल नामक क ग्रन्थ रचने की प्रेरणा दी थी । रामाष्टक, रामचरितसंग्रह आदि भक्तमाल की टीकाओं में -

प्रियदास लिखि-भक्ति रसबोधिनीटीका
लालचन्द्रदास लिखित - भक्तउखली
वैष्णवदास लिखित - भक्तमालटिप्पणी
गुमानीलाल लिखित-फारसीभक्तमाल
कीर्तिसिंह-गुरुमुखीभक्तमाल
तुलसीराम - भक्तिप्रदीप उर्दू
प्रतापसिंह - भक्तिकल्पद्रुम
रघुराजसिंह - रामरसिकावली
जीवारामलिखित - रसिकप्रकाशभक्तमाल
भारतेन्द - भक्तमालछप्पय
तपस्वीराम - रसूजेमहोवफा
ज्वालाप्रसादसिंह - हरिभक्तिप्रकाशिका
पुणाधाकृष्णदास - भक्तनामावलीध्रुवदास
भानुप्रतापतिवारी - अंग्रेजीभक्तमाल
आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । उदाहरण -

जा दिन सीता जन्म भयो,
जा दिन ते सब ही लोगिन को मन को शूल गयो ।

बालकृष्णदास -

ध्यानमंजरी, नेहप्रकास, सिद्धान्ततत्वदीपिका, दयालमंजरी, ग्वालपहेली, प्रेमपहेली, प्रेमपरीक्षा, परतीतपरीक्षा उदा -

दुलहियादूलह बने दिलदार,
श्री जनकलली ये फलीभाग बस भलीदेव तरुडारा ।

रुपलाल का रुपसखी नाम भी था ।

बालानन्द - इन्होने रामभक्ति में राम के बाल स्वरुप की उपासना का समर्थन किया है ।

कृपानिवास-ये दक्षिण भारत के निवासी थे । गुरमहिमा, प्रार्थना शतक, लगनपच्चीसी, युगलमाधुरीप्रकास, भावना शतक, जानकीसहस्रनाम, रामसहस्रनाम, अनन्तचिन्तामणि, समयप्रबन्ध, नित्यसुख, रहस्योपा, वर्षोत्सव-पदावली, रुपअमृतसिन्धु रससारग्रन्थ, रहस्यपदावली, सिद्धान्त-पदावली, अष्टक, तथा अनुमत पच्चीसी उदा-

सुलखि पिया मोहरी सिया की मुस्कानी ।

प्राणचन्द्रचौहान - दिल्ली निवासी थे रामायण महानाटक शीर्षक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की थी । इसका रचनाकाल सन् 1610 है। यह नाटक, दोहे और चौपाईयों में लिखा गया है । इसमं लेखक ने सम्पूर्ण रामकथा प्रस्तुत की है । सह हिन्दी का सर्वप्रथम काव्यनाटक माना जाता है ।

कातिक मास पच्छ उजियारा । तीरत पुण्य सोमकर वारा ।
ता दिन कथा कीन्ह अनुमाना । शाह सलेम दिलीपति पाना ।।
सवंत सौरह सै सतसाठा । पुण्य प्रगास पाय भय नाठा ।
जों सारदा माता करन दाया । बरनौ आदि पुरुष की माया ।।

छत्रसाल - महाराजा छत्रसाल पन्ना के राजा सम्पतराय के पुत्र थे । इनकी लिखी अनेक कृतियां प्रसिद्ध है जिनमें रामावतार के कवित, राम हवणाष्टक, हनुमान-पच्चीसी, राधाकृष्ण पच्चीसी, कृष्णावतार के पद, महाराजा छत्रसाल कृत अक्षर अनन्य के प्रश्न, दृष्टांती तथा राजनैतिक दोहा, समूह प्रमुख है ।

सीतानाथ, सेतुनाथ, सत्यनाथ, संभुनाथ,
नाथनाथ, देवनाथ दीनानाथ दीनगति ।

रायप्रिया शरणप्रेमकली - इनके प्रबन्धकाव्य सीतायन का उल्लेख मिलता है । उदा-

छबीली जनक ललिन की जोरी

जानकी रसिक शरण-रसमाला-के अतिरिक्त रसमालिनी रसमालिका, के नाम से विख्यात थे-अवधीसागर इनका एक उल्लिखित ग्रन्थ है उदा-

सिवराम रुप अपार प्रश्न अवधी सागर यहां ।

रामप्रपन्न मधुराचार्य-ये मधुरप्रिया के नाम से भी विख्यात है इनके लिखे हुए चार संस्कृत ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है-भगवतगुणदर्पण, माधुर्यकेलिकादम्बिनी, वाल्मीकिरामायण की टीका व रामतत्वप्रकाश उदाहरण-

सखि मै आजु गई सिय कुंज ।

हर्याचार्य हरिसहयरि हरिया हरि तथा हरि कवि भी प्रसिद्ध है, अष्टयाम, जानकीगीत प्रमुख है ।

रामतापनीयोनिषद तथा रामस्तवराभाय ये सभी राम प्रपन्न मधराचार्य की शिष्य प्ररम्परा में से है ।

सूर किशोर - मिथिला विलास, प्रयागदास भी रामकाव्य के रचयिता है ।

हृदयराम-हनुमाननाटक की रचना की थी इसके अतिरिक्त सुदामा चरित, रुक्मणीमंगल, भी इनकी रचनाएं हैं ।

कहौ हनू, कह्यौ श्री रघुबीर कछु सुधि है सिय की छिति मांही।

हे प्रभु लंक कलंक बिना सुबसे, तहं रावण बागकी छाही ।।

रामसखे, दैतभूषण, पदावली, रुपरसामृत सिन्धु, नृत्यराघवमिलन दोहावली, नृत्यराघवमिलन कवितावली रास्यपद्धति, दानलीलाबानी, मंगलशतक, तथा राममाला, प्रेमसखी, श्री सीताराम नखशिख, सियासखी, अष्टयामपदावली, रुपसरअपी-सीताराम रहस्य चन्द्रिका, रसमंजरी, गुरुप्रतापआदर्श श्री गुरु ।

अनामंक जातकम्, तथा दशरथ कथानम् में राम-कथा का उल्लेख मिलता है । जैन धर्म से सम्बन्धित साहित्य में भी हेमचन्द्र लिखित 'जैन रामायण' जिनदास लिखित 'राम-पुराण' पद्मदेव विजयगन्य लिखित 'रामचरित' एवं सोसेन लिखित 'रामचरित' में भी राम-कथा का समावेश हुआ है ।

गोस्वामी तुलसी दास ने रामचरित मानस मे राम की नर लीला का वर्णन करते हुए राम भक्ति की महत्ता प्रतिपादन करते हुए, काव्य के सभी अंगों का समावेश करके रूपक दिया है -

सप्त प्रबन्ध सुगम सोपाना । ग्यान नयन निरखत मन माना।।
रघुपति महिमा अगुन अबाधा । बरनव सोइ बर बारि अगाधा।।
राम सीय जस सलिल सुधा सम । उपमा बीचि बिलासमनोरम।।
पुरइनि सघन चारु चौपाई । जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई।।
छंद सोरठा सुन्दर दोहा । सोई बहु रंग कमल कुल सोहा ।।[1]

तुलसीदास जी ने काव्य का शिवत्व के तत्व से युक्त होना आवश्यक बताया है । इसीलिए उन्होंने नर-काव्य की रचना नहीं की। अपने अधिकांश ग्रन्थों में तुलसीदास ने अवधी भाषा का प्रयोग किया है । संस्कृत के उच्च ज्ञान के कारण उनकी भाषा में संस्कृतनिष्ठता अपेक्षाकृत अधिक मिलती है । अवधी के साथ-साथ ब्रज-भाषा का आंशिक समावेश भी उनके काव्य में मिलता है । कुछ कृतियों विशेष रुप से 'कवितावली', गीतावली, दोहावली, तथा विनयपत्रिका, में तो

ब्रज-भाषा अत्यन्त परिमार्जित रुप में मिलती है ।

राम-कथा का विस्तृत रुप से वर्णन करते हुए तुलसीदास जी ने आध्यात्मिक और दार्शनिक विषयों पर भी विस्तार से विचार किया है । ब्रह्म, माया, अवतार, जीव, मुक्ति, ज्ञान भक्ति आदि के विषय में तुलसीदास जी के विचार महत्वपूर्ण है । भगवान राम को विष्णु का अवतार माना है । उनके नाम और रुप को होने ईश्वर की उपाधि बताया है । ब्रह्म के निर्गुण और सगुण रुपों की तुना में राम-नाम का महत्व. उन्होंने विशेष रुप से प्रतिपादित किया है । माया को तुलसीदास ने एक शक्ति माना है जो निर्गुण भक्ति को सगुणभक्ति में परिणित कर देती है । लौकिक और आध्यात्मिक दोनों ही अर्थो में कवि ने माया के प्रभावों का वर्णन परमब्रह्म की रचनाशक्ति के अर्थ में किया है । विद्या माया और अविद्या माया का विवेचन करते हुए कवि ने जीव और जगत के सन्दर्भ में माया की सत्ता स्पष्ट की है । माया से मुक्ति तब तक असम्भव है जब तक जीव के हृदय में ज्ञान और भक्ति के साथ-साथ रामकृपा का प्रकाश न हो। कवि ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश को भगवान् राम के अंश से उत्पन्न बताया है । स्वयं हनुमान ने एक स्थान पर रावण को चेतावनी देते हुए उससे कहा है कि राम के अनुकूल न होने पर सहस्रों शिव, विष्णु तथा ब्रह्मा भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते ।[2] तुलसीदास जी ने भगवान राम के अवतार का कारण ब्राह्मणों, ऋषियों, मुनियों आदि की रक्षा तथा अन्याय, अधर्म आदि का निर्मूलन बताया है ।[3] जीव के विषय में गोस्वामी तुलसीदास जी का यह मत है कि वह ईश्वर का अंश है इसीलिए वह ईश्वर के आधीन रहता है । जीव की जागृति, स्वप्न तथा सुपुप्ति तीन अवस्थाएं होती है । जीवों की अनेक कोटियां होती है जिनमें वह मुक्ति का प्रधान साधन मानते हुए भक्ति का असाधारण महत्व प्रतिपादित किया है-

नर सहस्र महं सुनहु पुरारी । कोउ एक होइ धर्म ब्रतवारी ।।

धर्मसील कोटिक महं कोई । विषय विमुख विराग रत होई ॥
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई । सम्यक ग्यान सकृत कोउ लहई॥
ग्यानवंत कोटिक महं को । जीवन मुक्त सकृत जग सोउ ॥[4]
तिन्ह सहस्र महुं सब सुख खानी । दुर्लभ ब्रह्मा लीन विग्यानी॥
धर्मसील बिरक्त अरु ग्यानी । जीवनमुक्त ब्रह्म पर प्रानी ॥
सबते सो दुर्लभ सुरराया । राम भगति रत गत मद माया ॥[1]

तुलसीदास ने रामराज्य की कल्पना की थी जो वस्तुततः एक धर्मराज्य था । राजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह राज्य राजतंत्र था जिसमें प्रजा को लोकतंत्रात्मक स्तर पर स्वतंत्रता प्रदान की गयी थी । यह राज्य धर्मनिरपेक्ष न होकर धर्मराज्य था जिसका विधान धर्म-ग्रन्थों के अनुसार था । ईश्वर के प्रतिनिधि के रुप में राजा इसका प्रधान शासक होता था और उसके पश्चात उसका ज्येष्ठ पुत्र राजा बनता था । राज्य में शक्ति, नीति, ऐश्वर्य, धर्म, प्रताप, शील, सत्य, विवेक, बुद्धि आदि सद्गुणों की निहिति होती थी । राजा के लिए नीति के अनुसार ही कार्य करना प्रचंड विधान था । रामराज्य में तुलसीदास ने एक सामाजिक आदर्श की स्थापना की जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और वर्ग के पारस्परिक अधिकार और कर्तव्यों का विवेचन किया है । रामराज्य के गौरव का निरुपण करते हुए तुलसीदास ने उसमें अपने समन्वयवादी दृष्टिकोण का समावेश बी किया है ।

'रामचरित मानस'-

गोस्वामी तुलसीदास जी की सर्वप्रधान रचना 'रामचरितमानस' है जो संवत 1631 में आरम्भ होकर 1633 में समाप्त हुई थी । सात कांडो में विभाजित इस महाकाव्य में तुलसीदास ने भगवान् रामचन्द्र की कथा का वर्णन किया है । दक्षों से लंका को जीतकर रावण का वहां राज्यारम्भ, उसके अत्याचारों से त्रस्त पृथ्वी का देवताओं की शरणगमन, आकाशवाणी द्वारा रामावतार की घोषणा, दशरथ के यहां कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा से राम, भरत, लक्ष्मण, और शत्रुघ्न का जन्म, विश्वामित्र का राम और लक्ष्मण की सहायता से

यज्ञ संपन्न, राम-लक्ष्मण द्वारा असुरसंहार सीता की स्वयंवर योजना। रावण और बाणासुर का अभिमान नष्ट होना, राम द्वारा धनुषभंग और सीता से विवाह । राम के राजतिलक की योजना परन्तु फिर राम बनवास, दशरथमरण, सूर्पणखा प्रसंग, खरदूषण-बधा, सीताहरण, राम का सेनानियोजन तथा लंका पर आक्रमण, रावण-वध तथा राम का अयोध्यापुर वापस आने पर राज्याभिषेक आदि का विस्तार से वर्णन इस महाकाव्य में हुआ है ।

प्रसंग रुप से इनमें एक बड़ी संख्या में स्फुट कथाओं का समावेश किया गया है तथा प्रसंगानुसार ही अनेक आध्यात्मिक दार्शनिक विषयों का निरुपण किया है । तुलसीदास की भक्ति-भावना भी रामचरितमानस के सन्दर्भ में स्पष्ट होती है । राम-काव्य की परम्परा में रामचरितमानस को इस युग की सर्वोच्च उपलब्धि के रुप में मान्य किया जाता है।

'गीतावली'

'गीतावली' में तुलसीदास जी ने गीति-शैली में रामकथा का वर्णन किया है । कहा जाता है कि इसे 'पदावली रामायण' तथा 'रामगीतावली' नाम भी दिया गया था । वह रचना भी सात पृथक् खंडों में विभाजित है और इसमें कथा के अंशों का विभाजित लगभग उसी रुप में हुआ है जिस रुप में 'रामचरितमानस' में पृथक्-पृथक् खंडों में मिलता है । इस कृति में रामचरित को अत्यन्त सरस शैली में वर्णित किया गया है । आध्यात्मिक और दार्शनिक विषयों का गम्भीर और गूढ़ विवेचन इसमें नहीं मिलता है । गीतावली की अनेक प्रतियां उपलब्ध होती हैं जिनकी प्रामाणिकता और प्रक्षिप्तता के विषय में विद्वानों में मतभेद है । रामकथा का विकास इसमें भी अधिकांशतः रामचरितमानस के आधार पर ही हुआ है परन्तु अनेक प्रसंगों में कुछ अंतर इसमें मिलता है । इसका कारण भी सम्भवतः यह है कि इसके माध्यम से कवि रसात्मक रुप में राम का कथा-गान करना चाहता था और इसीलिए मानवीय स्तर पर ही इसमें कवि ने भावाभिव्यंजना प्रस्तुत की ।

'विनयपत्रिका' -

'विनयपत्रिका' में तुलसीदास जी ने राम-भक्ति और राम के प्रति आत्मनिवेदन के स्तुतिपरक पद संगृहीत किये हैं । राम के अतिरिक्त इनमें गणेश, शिव, पार्वती, गंगा, यमुना, काशी, चित्रकूट, हनुमान, सीता और विष्णु आदि की स्तुति में कहे गये पद प्रस्तुत किये हैं । मुख्य भावना राम-भक्ति कामना की है और सभी देवी-देवताओं की स्तुति के माध्यम से कवि ने राम-भक्ति का वरदान मांगा है । भगवान् राम से प्रत्यक्ष भक्ति-निवेदन न करके हनुमान्, शत्रुघ्न, भरत और लक्ष्मण के माध्यम से तुलसीदास उकी अनुकंपा की आकांक्षा करते है । हिन्दी भक्ति-काव्य में आत्म-निवेदन के रुप में जो काव्य लिखा गया है उसमें 'विनयपत्रिका' का सर्वोच्च सीन है ।

'दोहावली'

गोस्वामी तुलसीदास लिखित 'दोहावली' में 573 दोहे संगृहीत हैं । इसकी अनेक प्रतियां उपलब्ध हैं जिनके विषय में विद्वानों के विविध मत हैं । जितने भी दोहे इसमें संगृहीत हैं उनमें से बहुत से अन्य कृतियों में भी मिलते हैं । दोहावली में संगृहीत दोहों में मुख्यतः भगवान् के प्रति भक्ति की भावनात्मक अन्यता और एकनिष्ठता का वर्णन है ।

'कवितावली'

गोस्वामी तुलसीदास की लिखी हुई 'कवितावली' शीर्षक रचना में ब्रज-भाषा में लिखे हुए कवित्त और कवैया छंद संगृहीत हैं । तुलसीदास के विविध स्फुट काव्य-ग्रन्थों की भांति इसमें भी राम-भक्ति तथा आध्यात्मिक-दार्शनिक विषयों से सम्बन्धित छंद मिलते हैं । इसमें भी कवि ने चंद-विभाजन रामकथा के विविध कांडों के अनुरुप ही सात भागों में किया है । राम-कथा का क्रम-निर्वाह इसमें भी हुआ है यद्यपि विविध प्रसंगों के अनुसार कहीं-कहीं विषय में अत्यन्त

संक्षिप्तता और कहीं पर अत्यन्त विस्तार भी मिलता है । ईश्वर के प्रति भक्त के आत्मनिवेदन के पद इसमें भी मिलते हैं तुलसीदास जी के विविध काव्य-ग्रन्थों में से कुछ प्रसंग उदाहरणाएं नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

प्रबल प्रचंड बरिबंड बाहुबंड वीर,
    धाए जातुधान, हनुमान लियौ घेरिकै ।
महाबल पुंज कुंजरारि ज्यों गरजि फेरिकै,
    जहाँ तहाँ पटके लंगूर फेरि फेरिकै ।।
मारे लात, तोरे गात, भागे जात, हाहा खात,
    हैं तुलसीदास "राखि राम की सौं" टेरिकै ।।
ठहर ठहर परै, कहरि कहरि उठै,
    हहरि हहरि हर सिद्ध हंसै हेरिकै ।।

जासु कृपा सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहना ।।
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयने ।
करउ सो मम-उर धाम सदा छीर सागर सयन ।।
कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन ।।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ।।
बंदउं गुरु पर कंज कृपा सिंधु नररुप हरि ।।
महामोह तम पुंज जासु बचन रवि कर निकर ।।
।। रामचरितमानस वंदना ।।

नाम भरोस, नाम बल, नाम सनेहु ।[1]
जमन जनम रघुनंदन तुलसिहि देहु ।[2]
जनम जनम जहं जहं तुसिहि देहु, तहं तहं रामनि बाहिब नाम सनेहु[4]

रामायण काव्य परम्परा में स्वामी अग्रदास जी का महत्वपूर्ण स्थान है । स्वामी अग्रदास जी राम-भक्ति के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'अष्टयाम के प्रणेता थे । यह भाक्तमान के लेखक स्वामी नारायणदास या नाभादास कें भी गुरु थे । प्रियादास जी ने इनके विषय में उल्लेख किया है जिसके

अनुसार यह आमेर के राजा मानसिंह के समकालीन थे जो अकबर के दरबारी थे । इसी अनुमान पर अग्रदास जी का समय सन् 1556 के लगभग अनुमानित किया जाता है । इन्होंने राम-भक्ति में ज्ञान की अपेक्षा मधुरोपासना का अनुमोदन किया था । इनकी एक प्रशस्त शिष्य, परम्परा थी । जंगी, प्रयागदास, विनोदी, पूरनदास, बनवारीदास, नरसिंहदास, भगवानदास, दिवाकर, किशोर, जगतदास, जगन्नाथदास, सल्कधो, खेमदास खीची, धर्मदास, लघु ऊधो आदि थे । इनके जीवन के सम्बन्ध में जो विचरण उपलब्ध है उसके अनुसार यह राजस्थान में जन्में थे । बचपन में यह श्रीकृष्णदास पयहारी के शिष्य हुए । बाद में इन्होंने अपनी पृथक् गद्दी बनायी जिसमें नाभादास, देवमुरारि, पूर्णवैराठी, दिवाकर तथा भगवन्नारयण आदि आचार्य हुए। रामभक्ति परम्परा के अन्तर्गत जो मधुरोपासना का विकास हुआ उसमें यह अग्रअली के नाम से भी प्रसिद्ध थे क्योंकि इस परम्परा में अली शब्द की छाप प्राचीनतम है । अग्रदास जी की लिखी हुई कृतियों में 'ध्यान मंजरी' अथवा 'रामध्यानमंजरी' 'कुंडलिया अथवा हितोपदेश उपखांडा वामनी', 'श्रंगार रस सागर अथवा अग्रसागर' आदि के नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं । संस्कृत में इन्होंने 'अष्टयाम' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की थी । अग्रदास जी के काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है :-

देखो झूलत राधो डोल ।
जनक सुता लीने संग सोभित गौर स्याम तन लोल ।
हीरा पन्ना लाल पिरोजा रतन खचित बेमोल ।
क्रीडत राम जानकी दोऊ बजै दुन्दभी ढोल ॥
हंसत परसपर प्रीतम प्यारी आनन्द बढ्यो सचोल ।
श्री 'अग्रअली' सुनि-सुनि सुख पावति बोलहिं मीठे बोला ।

स्वामी अग्रदास जी के बाद नाभादास जी भी रामकाव्य परम्परागत के अन्तर्गत आते हैं । नाभादास अग्रदास जी के सर्वप्रमुख शिष्य के रुप में उल्लिखित किये जाते हैं । अग्रदास के पूर्व इनकी गुरु-

परम्परा में कृष्णदास पयहारी, अनन्तानन्द तथा रामानन्द हुए थे । कहा जाता है कि इनकी भक्ति भावना और सिद्धि से प्रभावित होकर इनके गुरु ने इन्हें भक्तमाल नामक ग्रन्थ की रचना करने की प्रेरणा दी थी। इनके जीवन के सम्बन्ध में जो विवरण उपलब्ध होता है उसके अनुसार यह बचपन से ही नेत्रहीन थे । पांच वर्ष की अवस्था में ही इनकी मां ने अकाल के समय इन्हें किसी बन में छोड़ दिया था । संयोगवश कील्ह तथा अग्रदास ने इन्हें उस मार्ग से गुजरने पर उठा लिया और कमंडल के जल के छींटे देकर इनके नेत्र ठी कर दिये । फिर महात्माओ के सत्संग में इनका पालन-पोषण हुआ। प्रियादास जी इन्हें अनुमान वंश का बताते हैं । तुलसीराम तथा तपस्वीराम ने इस वंश के प्रवर्तकों में रामदास का नाम लिया है । इस वंश के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों के भी पृथक्-पृथक् मत हैं । इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत इनका नाम नाभाअली था । इसके पूर्व इनके ारायणदास नाम का भी उल्लेख किया जाता है । भक्तमाल के अतिरिक्त इनकी एक अन्य रचना 'रामाष्टयाम' शीर्षक से भी प्रसिद्ध है । 'रामचरितसंग्रह' नामक एक अन्य ग्रन्थ भी इनका रचा हुआ बताया जाता है । भक्तमाल शीर्षक ग्रन्थ का राम-भक्ति-परम्परा में बहुत महत्वपूर्ण सीन रहा है । इस ग्रन्थ की अनेक टीकाएं की गयी हैं और उनकी एक पृथक् परम्परा-सी विकसित हुई है । भक्तमाल में रामानन्द सम्प्रदाय का संपूर्ण विवरण उपलब्ध है । यह ग्रन्थ ब्रजभाषा में लिखा गया है जिसमें छप्पय, दोहा, छंद आदि का प्रयोग है । भक्तमाल की टीकाओं में प्रियादास लिखित

नाभादास के बाद रामकाव्य परम्परा में बालकृष्ण जी का महत्वपूर्ण योगदान है । बालकृष्ण जी बालअली के नाम से भी विख्यात हैं। यह विनोद स्वामी अथवा विनोदीजी, ध्यानदास और चरणदास की शिष्य परम्परा में थे । इनका रचना काल संवत् 1726 से लेकर 1749 के मध्य बताया जाता है । इनकी लिखी हुई रचनाओं में 'ध्यानमंजरी' नेहप्रकास, सिद्धान्त-तत्वदीपिका, दयालमंजरी, ग्वालपहेली, प्रेमपहेली प्रेम-परीखा तथा परतीतपरीक्षा आदि कृतियां है ।

हृदयराम के बाद यह परम्परा सतत चलती रही । हृदयराम के बाद रामसखे का भी योगदान रहा है ।

स्वामी रामसखे का समय 18वीं शताब्दी का प्रारम्भिक काल माना जाता है । यह आचार्य वशिष्ठतीर्थ के शिष्य थे । इनके शिष्यों में चित्रनिधि, रुपसिंह आदि थे । रामसखे जी की रची हुई कृतियों में द्वैतभूषण, पदावली, रुपरसामृतसिंधु, नृत्यराघवमिलन दोहावली, नृत्यराघवमिलन कवितावली, रास्यपद्धति, दानलीला, बानी, मंगलशतक, तथा 'राममाला' आदि हैं । उनकी वंश परम्परा मं आगे चलकर स्वामी अवधशरण भी हुए थे जिनके पिता का नाम रामदयालु था । उन्होंने स्वामी लक्ष्मणाचार्य से दीक्षा ली थी । उन्होंने प्रसिद्ध न्यायशास्त्री दिवाकर भट्ट को शास्त्रार्थ में पराजित किया था । महाराज रघुराजसिंह, पं. रामाधीन, पं. उामपति आदि भी इनके संपर्क में रहे थे । यह अपने सम्प्रदाय में 'लाल साहब' के नाम से भी प्रख्यात थे । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में 'सख्यसिंधुचन्द्रोदय' प्रसिद्ध है ।

रामसखे के बाद इस परम्परा को आगे बढ़ाने का काम प्रेमसखी ने किया ।

स्वामी प्रेमसखी ने चित्रकूट के महात्मा रामदास गूदर से दीक्षा ली थी । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में 'होली, कवितादिप्रबंध तथा 'श्री सीताराम नखशिख आदि हैं इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है :-

कागद तौ न उठै कर ते कर लेखनी कंपित कौन उठावै ।।
लालन दृष्टि परी जब ते प्रिय नाम सुने अंसुवा झरि लावै ।।
'प्रेमसखी' मधु की मखियाँ मन जाय फंस्यों अब हाथ न आवै।।
मूरत श्री रघुनन्दन की लिखते न बनै लखते बनि आवै ।।

सियासखी भी इसी काव्यधारा में आती है । स्वामी गोपालदास सम्प्रदाय में सियासखी के नाम से विख्यात थे । ये झांझूदास जी

के शिष्य थे । सीताराम मंदिर की गद्दी अपने अनुज चंद्रअली का नाम बलदेव दास था जिनकी एक रचना 'अष्टयामपदावली' नाम से उल्लिखित की जाती है । सियसखी जी के पुत्र रामानुज दास रुपसरस के नाम से विख्यात थे । इनके शिष्य चंदेरी के युवराज सीतारामशरण के नाम से प्रसिद्ध हुए थे । रुपसरसजी की कृतियों में 'सीताराम रहस्यचंद्रिका', रसमंजरी, गरुप्रतापआदर्श, तथा श्रीगुरुअर्चामहात्म्य, आदि है ।

रामंप्रसाद जी भी इसी काव्यधारा के कवि हैं । स्वामी रामप्रसाद 'बिन्दुकाचार्य के नाम से विख्यात हैं । इनके गुरु आचार्य बसावन थे । आगे चलकर इन्होने महात्मा लक्ष्मीराम से दीक्षा ली थी । इनके पुत्र का नाम रामगुलाम तथा पुत्री का नाम रामकुँवरी था । इनकी रचनाओं में 'शिक्षापत्री' तथा 'गीतातात्पर्यनिर्णय' उल्लिखित की जाती है । इनकी शिष्य परम्परा में महात्मा मनिराम भी हुए थे । कहा जाता है कि यह स्वामी रामचरदास की कृतियों में 'अमृतखंड', शतपंचासिका, रसमल्लिका, रामपदावली, सियारामरसमंजरी, सेवाविधि, छप्पयरामायण, जयमाल संग्रह, चरणचिन्ह, कवितावली, दृष्टांतबोधिक, तीर्थयात्रा, विरहशतक, वैराग्यशक, नामशतक, उपासनाशतक, विवेकशतक, पिंगल, अष्टयाम सेवाविधि, कवितावली, काव्यश्रृंगार, झूलन, कौशलेन्द्ररहस्य रामचरितमानस की टीका, तथा रामनवरत्नसारसंग्रह है । इनके शिष्यों में जीवाराम 'युगलप्रिया', जकरा किशोरीशरण रसिकअली' और हरिदास के नाम उल्लेखनीय हैं जीवारामजी शंकरदास के पुत्र थे । इन्होने 'रसिकप्रकाश, भक्तमाल, पदावली, श्रृंगार रहस्य, तथा अष्टयामवर्तिक, की रचना की थी । स्वामी जनकराज किशोरीशरण 'रसिकअली' के नाम से भी विख्यात है । इनका जन्म सन् 1818 के लगभग तथा मृत्यु 1848 में हुई थी । यह काठियावाड़ के निवासी थे । बचपन में ही यह ओध्या आकर रहने गे थे और राजराघवदास को इन्होने अपना गुरु मान लिया था । आगे चलकर यह रामचरणदास के शिष्य हो गये थे । तभी यह 'रसिकअली' के नाम से विख्यात हुए थे । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में 'सिद्धान्त मुक्तावली, अनन्यतरंगणी, आन्दोलरहस्यदीपिका,

तुलसीदासचरित, विवेकसारचंद्रिका, सिद्धान्तचौंतीसा, बारहखड़ी, लालितश्रृंगार दीपक, कवितावली, जानकीकरणभरण, श्रीसीतारामरहस्यरंगणी, आत्मसम्बन्धदर्पण, होलिकाविनोद, वेदान्तसार सुभदीपिका, श्रुतिदीपिका, श्रीरामरासदीपिका, दोहावली, रघुबरकरुणभरण, मिथिलाविलास, अष्टयामप्रबन्ध, वर्षोत्सव पदावली, जिज्ञासापंचक, श्री सीताराम सिद्धांत तरंगणी, तथा अमर रामायण, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

रामप्रसाद के बाद रामकाव्य धारा में शिवलाल और केशवदास जी का महत्वपूर्ण योगदान है । स्वामी शिवलाल पाठक गोरखपुर जिले के निवासी थे । इनका जन्म सन् 1756 में हुआ था । इनके पिता देवीदत्त पाठक और माता सोलंखी देवी थी । इन्होंने शिवलोचन शास्त्री से शिक्षा प्राप्त की थी । स्वामी रामप्रसाद से भी अधिक ज्ञानार्जन किया था । इनकी रचनाओं में 'मानसमयक, मानसअभिप्रायदीपक तथा बाल्मीकि रामायण की भावप्रकाश टीका आदि है ।

आचार्य केशवदास जी के बारे में कौन नहीं जानता । आचार्य केशवदास की जन्म-तिथि के सम्बन्ध में विभिन्न मतभेद आचार्य केशवदास जी ओरछा के महाराज इन्द्रजीत सिंहजी के राजकवि थे । उनके पिता का नाम काशीनाथ था जो मधुकरशाह के राजपुरोहित थे । राम-काव्य की परम्परा में केशवदास का लिखा हुआ 'रामचन्द्रिका' शीर्षक प्रबन्धकाव्य विशेष महत्व रखता है । रामचंद्रिका में केशवदास ने रामकाव्य को पूर्ववर्ती कथा-परम्परा की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया है । इस दृष्टि से इसमें जो विशिष्ट प्रसंग है उन पर संस्कृत के तथा पूर्ववर्ती हिन्दी साहित्य के विशिष्ट संदर्भो का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है । 'रामचंद्रिका प्रस्तुत राम-कथा पूर्ववर्ती पभाव से युक्त होते हुए भी पर्याप्त मौलिकता लिए हुए प्रतीत होती है । इसका मुख्य कारण यह है कि 'रामचंद्रिका'में कवि ने जिन पात्रों की चरित्र योजना की है वह अपेक्षाकृत मानवीय गुणों से युक्त है । 'रामचन्द्रिका' में केशवदास ने प्रबन्धकाव्य के तत्वों का निर्वाह करते हुए आलम्बन, उद्दीपन; अलंकृत, मानवीकृत आदि रुपों में प्रकृति का चित्रण किया है । 'रामचंद्रिका'

में कवि ने यह स्पष्टतः संकेत किया है कि इसका उद्देश्य राम रुपी चंद्र के प्रकाश की छवि दिखाना है । उन्होंने रामचन्द्र को अपना इष्ट मानकर उनका गुणगान किया है । केशव ने यद्यपि राम-कथा प्रायः संपूर्ण रुप में ही प्रस्तुत की है परन्तु उनकी कमबद्धता का विशेष विचार नहीं रखा है । अनेक प्रसंग जो पूर्ववर्ती राम-काव्य में विस्तार से वर्णित है, केशव न केवल औपचारिक रुप से ही प्रस्तुत किये हैं । एक अलंकार-शास्त्री होने के कारण केशव ने इस ग्रन्थ में महाकाव्यत्व के निर्वाह की ओर उतना नहीं काव्य-सौष्टव की दृष्टि से 'रामचंद्रिका' का महत्व निर्विवाद है । रामचंद्रिका के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध में कुछ पौराणिक संदर्भ भी प्रासंगिक रुप में समाविष्ट किये गये है । परवर्ती राम-साहित्य पर भी रामचंद्रिका का व्यापक प्रभाव पड़ा है । रसिकगोविन्द लिखित 'रामायण सूचनिका, लछिराम लिखित 'रामचन्द्रभूषण', गुरुगोविन्दसिंह लिखित 'गोविन्दरामायण', रामप्रियाशरण लिखित 'सीतायन', रघुराजसिंह लिखित रामस्वयंवर', रसिकलाल बिहारी लिखित 'रामरसायन', जानकीप्रसाद लिखित 'रामनिवासरामायण', नवसिंह लिखित 'राम-चन्द्रविलास', रामचरित उपाध्याय लिखित 'रामचरित चिंतामणि', बलदेवप्रसाद मिश्र लिखित 'कौशल किशोर' आदि में राम-कथा का निर्वाह मिलता है ।

रामगुलाम द्विवेदी इसी काव्यधारा के प्रसिद्ध कवि है । श्री रामगुलाम द्विवेदी मिर्जापुर के निवासी थे । इनके गुरु रामप्रसाद जी थे । इन्होंने 'कवित्त प्रबंध', 'रामगीतावली', 'ललित नामावली', 'विनय नव पंचक', दोहावली-रामायण, हनुमानाष्टक, रामकृष्ण सत्पक, श्रीकृष्णपंचरत्नपंचक, श्रीरामाष्टक, रामाविनय, रामस्तवराज तथा बरवा आदि ग्रन्थों की रचना की थी ।

विश्वनाथ सिंह जू देव भी इसी परम्परा से अनुप्राणित रहे । महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव रीवा नरेश जयसिंह के पुत्र थे । इन्होंने महात्मा प्रियादास से दीक्षा ली थी । इनके लिखे हुए अनेक ग्रन्थ हैं जिनमें से प्रमुख 'रामगीता टीका', तत्वमस्यर्थसिद्धांत भाष्य, राधावल्लभी भाष्य, सर्वसिद्धान्त, रामरहस्य टीका, वैष्णव सिद्धान्त टीका, धनुर्विद्या,

रामचंद्रिकान्हिक तिलक, रामसागरान्हिक तिलक, रागसागरान्हिक, संगीतरघुनंदन, मुक्ति मुक्तिसदानन्द, दीक्षानिर्णय, व्यंग्यार्थचन्द्रिका, भागवत एकादश स्कंध की टीका, सुमार्ग की ज्योत्स्ना टीका, रामपरत्व, व्यंग्य प्रकाश, विश्वनाथ प्रकाश, आन्हिकअष्टयाम, धर्मशास्त्र त्रिंशत्श्लोकी, परमधर्म निर्णय, शांतिशतक, विश्वनाथ चरित, ध्रुवाष्टक सतिलक, मृगयाशतक, परमतत्व, उत्तमकाव्य-प्रकाश, गीतारघुनंदनशत्रिका, रामायण, गीता-रघुनंदन प्रमाणिक, सर्वसंग्रह, रामचन्द्र जू की सवारी, भजनमाला, तथा आनन्द रघुनंदन नाटक, आदि हैं ।

महाराज विश्वनाथ सिंह जी के पुत्र महाराज रघुराजसिंह भी काव्य रचना करते थे । राम-भक्ति में इनकी अनन्य आस्था थी । अनेक राम-काव्यकार इनके संपर्क में रहते थे जिनमें लक्ष्मणप्रसाद, संत कवि, हनुमान प्रसाद, बख्शी गोपालदत्त, माखन, नन्दकिशोर, पुष्कर सिंह, जगदीश प्रसाद गौतम, गया प्रसाद कायस्थ, गोविन्द प्रसाद अजबेस, सीताराम, वासुदेव रसिक नारायण, रसिक बिहारी, तथा रामचन्द्रशास्त्री आदि थे । रघुराज सिंह की प्रमुख रचनाओं में सुन्दरशतक, विनयपत्रिका, रुक्मिणी परिणय, आनन्दाम्बुनिधि, भक्तिविलास, रहस्यपंचाध्यायी, रामरसिकावली, राम स्वयंवर, विनय-प्रकाश, रामअष्टयाम, रघुपतिशतक, धर्म-विलास, श्रीमद्भागवतमहात्म्य, भागवतभाषा, गंगाशतक, शंभुशतक, हनुमच्चरित्र, परमप्रबोध, सुधर्मविलास, रघुराजचन्द्रावली, नर्मदाष्टक आदि है ।

प्रताप कुंवरि बाई का राम काव्य परम्परा की एक विशिष्ट प्रदान मान जा सकता है । प्रतापकुंवरि बाई गोयन्द दास रखलौत की पुत्री थीं । इनके पति मारवाड़ में महाराजा मानसिंह थे । बचपन में ही स्वामी पूर्णादास के उपदेश से इनमें राम-भक्ति का उदय हुआ था। विधवा होने पर इन्होंने रामचर्या को ही अपना सर्वस्व समझ लिया। इनकी लिखी हुई पुस्तकों में रामचन्द्र-महिमा, रामगुणसागर, रघुवर स्नेह लीला, रामसुजस पचीसी, राम-प्रम सुखसागर पत्रिका, रघुनाथ जी के कवित्त, भजनपद हर जस, प्रताप विनय, श्रीरामचन्द्र विजय, हरजस

गायन आदि हैं ।

MEHTA LIBRARY
University of Baroda

प्रताप कुंवरि बाई का राम काव्य परम्परा की एक विशिष्ट प्रदान माना जा सकता है । प्रतापकुंवरि बाई गोयन्द दास रखलौत की पुत्री थीं । इनके पति मारवाड़ में महाराजा मानसिंह थे । बचपन में ही स्वामी पूर्णादास के उपदेश से इनमें राम-भक्ति का उदय हुआ था । विधवा होने पर इन्होंने रामचर्या को ही अपना सर्वस्व समझ लिया । इनकी लिखी हुई पुस्तकों में रामचन्द्र-महिमा, रामगुणसागर, रघुवर स्नेह लीला, रामसुजस पचीसी, राम-प्रेम सुखसागर पत्रिका, रघुनाथ जी के कवित्त, भजनपद हर जस, प्रताप विनय, श्रीरामचन्द्र विजय, हरजस गायन आदि हैं ।

काष्ठजिह्वास्वामी ‘देव’ रामकाव्य परम्परा के प्रसिद्ध कवि हैं । काष्ठजिह्वास्वामी ‘देव’ काशी-नरेश ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह के गुरु थे । इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिनमें रामायण परिचर्या, विनयामृत, पदावली, रामलगन, वैराग्यप्रदीप, अयोध्या बिन्दु, अश्विनीकुमार बिन्दु, गया बिन्दु, जानकी बिन्दु, पंचकोशमहिमा, मथुरा बिन्दु, रामरंग, श्याम रंग, श्यामसुधा, उदासीसंत स्त्रोत्र, आदि हैं ।

उमापति त्रिपाठी ‘कोविद’ भी इसी परम्परा से संलग्न हैं । श्री उमापति त्रिपाठी ‘कोविद’ सीतापुर के निवासी थे । इनके पिता का नाम शंकरपति त्रिपाठी था । इनके गुरुओं में श्रीकृष्णराम शेष, धनवंतरि भट्ट तथा भैरवदत्त मिश्र थे । नैपाल-नरेश सुरेन्द्र विक्रमशाह ने इनका सम्मान किया था । लखनऊ में राजा बख्तावर सिंह रीवा में महाराज विश्वनाथ सिंह तथा अयोध्या के राजा दर्शन सिंह ने भी इन्हें सम्मानित किया था । कहा जाता है कि इन्होंने काशी में महादेव मिश्र से ब्रह्मविद्या प्राप्त की थी । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में न्यायतरंगिणी, महातत्वप्रकाश, कपिलसूत्रसारोद्धार, पतंजलिसूत्रवृत्ति, वेदान्तकल्पलतिका, वृत्तप्रकाश, भाष्यटिप्पण, शब्देन्दुधराधर, व्याख्येन्दुधराधर, पूर्वपक्षीय, वेदस्तुतिटीका, सख्यसरोजभास्तक, गीतगोविन्द, उमापतिशतकत्रय, सुधामंदाकिनीस्तोत्र, रम्यपदावली, दोहावली रत्नावली, श्रीधरशतक, रुद्राष्टक, दर्शनशतक;

कालिकाष्टक, अयोध्या विंशतिका, करुणाकल्पलता, घुनाथस्तोत्र, हनुमदष्टक, लंबोदर अष्टक, रामस्तोत्र, जानकीस्तोत्र, रघुनंदनषोडशक, हसनुमत कुंडलिया, विचित्र रामायण, रामसंगीत, ऋतुवर्णन, होलिका विसर्जन, अक्षरमाला-भाष्य, दर्शनशतक, दिग्विजयशतक, रामसहस्रनाम आदि हैं ।

युगलानन्यशरण 'हेमलता' का भी इसीपरम्परा में सीन है । स्वामी युगलानन्यशरण 'हेमलता' का जन्म सन् 1818 ई. में हुआ था । वह पटना जिले के निवासी थे । इन्होंने कृष्ण नामक गुरु से शिक्षा प्राप्त की थी । भक्तमालि संत की प्रेरणा से यह युगलप्रिया जी के शिष्य नें थे । इनके लिखे हुए ग्रन्थ एक बड़ी संख्या में उपलब्ध होते हैं जिनमें सीताराम स्नेहसागर, रघुवर-गुण-दर्पण, मधुर मंजुमाला, सीतराम नाम-प्रताप प्रकाश, प्रेमपरत्वप्रभा दोहावली, विनय-विहार, प्रेमप्रकाश, नाम प्रेम-प्रवद्धिनी, सत्संग सतसई, भक्तनामावली, प्रेमउमंग, सुमतिप्रकाशिका, हृदयहुलासिनी, अभ्यासप्रकाश, उपदेशनीतिशतक, उज्जवलउत्कंठा विलास, मंजुमोदचौंतीसी, वर्ण-विहार, मनबोधशतक, विरतिशतक, वर्णबोध, बीसायंत्र, पंचदशी यंत्र, चौंतीसा यंत्र, हर्फप्रकाश, अनन्यप्रमोद, नवल नाम चिंतामणि, संतवचनविलासिक, वर्णउमंग, रुपरहस्य पदावली, रुपरहस्यानुभव, संतसुखप्रकाशिका, अवधावासीपरत्व, रामनामपरत्वपदावली, सीतारामउत्सव प्रकाशिका, अवध-विहार, सुखसीमा दोहावली, उज्जवलउपदेश-यंत्रिका, नाममय एका-क्षरकोष, योगसिंधुतरंग, युग वर्ण-विलास, प्रबोधदीपिका दोहावली, दिव्यदृष्टांत प्रकाशिका, प्रमोददायिका दोहावली, वर्णविहारमोद चौंतीसी, उदरचरित्रप्रश्नोत्तरी, अष्टादशरहस्य, जानकी स्नेहहुलास शतक, नामपरत्वपंचाशिका, वर्ण-विहार दोहा, सतविनयशतक, विरक्तिशतक, विशदवस्तुबोधावली, तत्वउपदेशत्रय, बारहराशि सातवार, मणिमाल, अर्थपंचक, मन नसीहत, फारसीहुरुफतहजीवार झूलना, शिवाशिव अगस्त्य सुतीक्ष्ण संवाद, वैष्णवोपयोगिनिर्णय, पंचायुध स्तोत्र, झूलन फारसी हुरुफ, झूलन हिन्दी वर्ण, नींद बतीसी, पन्द्रा यंत्र, अष्टयाम ककहरा, अनन्य प्रमोद, प्रीति पचासिका, नाम विनोद बसावन बरवै, राम नवरत्न, गुरुमहिमा, संत चनावली, पारसमार्ग, विनोद विलास आदि मुख्य हैं । इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है :

ललन कैसे निवहैगी मोरी तोरी प्रीति ।
जो माखन हिय बीच प्रान प्रिय तेहि पथ चलत सभीत ।
महा मलीन मूल मरगह वपु तासन नेह विपरीत ।
पल भर कह्यो न मानत मम मन रचत रीति विपरीत ।
'युगल अनन्य शरण' तापित मन कीजिय पदि सुसीत ।।

रामवल्लभशरण 'प्रेमनिधि' का इस परम्परा में योगदान रहा है । स्वामी युगलानन्यशरण के प्रशिष्य रामवल्लभशरण 'प्रेमनिधि' का जन्म सन् 1858 में हुआ था । यह बुन्देलखंड के रहने वाले थे । इनके पिता रामलाल और माता रमादेवी थीं । इनके घर का नाम धनुषधारी था । इन्होंने रामवचनदास जी से दीक्षा ली थी । महात्मा नरहरिदास, मणिराम, विद्यादास तथा क्याणदास के सम्पर्क में भी यह आये थे । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में 'बृहत्कोषलखंड की टीका, शिवसंहिता की टीका, सख्यसिन्धुचन्द्रोदय की टीका, जानकीस्तवराज की टीका, सुन्दरमणि संदर्भ की टीका, रामनवरत्न की टीका, ध्यानमंजरी की टीका, रहस्यत्रय की टीका, तत्वत्रय की टीका, शिक्षापत्री की टीका, रामपटल की टीका, विनयकुसुमांजलि की टीका, सुदामा बारह खड़ी की टीका, रामस्तवराज के श्री हरिदास कृत भाष्य की टीका, रमातापिनी उपनिषद् के श्री हरिदास कृत भाष्य की टीका मुख्य है ।

बैजनाथ पूर्ववंशी रामकाव्य परम्परा के अनुयायी थे । श्री बैजनाथ पूर्ववंशी का जन्म संवत् 1890 में हुआ था । यह बारावंकी जिले के निवासी थे । इनके पिता का नाम हीरानन्द था । इन्होंने अपने चाचा फर्केराम से दीक्षा ली थी जिनके गुरु महात्मा वैष्णवदास थे । बैजनाथ जी के ग्रन्थों में गीतावली की टीका, काव्यकल्पद्रुम, कवितावली की टीका, रामचरितमानस की टीका, राम सतसैया, भावप्रकाशिका, रामसिया, संयोगपदावली आदि है ।

जानकी प्रसाद 'रसिकबिहारी' ने इस परम्परा की सिद्धि को बढ़ाया स्वामी जानकी प्रसाद 'रसिकबिहारी' का जन्म 1844 में हुआ था । वह झांसी के निवासी थे । उनके पिता का नाम श्रीधर था ।

इनके गुरु महंत प्यारेराम थे । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में काव्य सुधाकर, मानस प्रश्न, नामपचीसी, सुमति पचीसी, आनन्दवेलि, पावस विनोद, सुयश कदंब, ऋतुरंग, नेह सुन्दरी, रस कौमुदी, विपरीत विलास, इश्क अजायब, बजरंग बत्तीसी, विरह दिवाकर, ग्रन्थ प्रभाकर, कानून स्टाम्प, कानून जाप्ते अंग्रेज, सतरंज विनोद, नवल चरित्र, पट्टऋतु विभाग, राग टक्रावली, मोदमुकर, कल्पतरु कवित्त, दरिद्रमोचन, रामरसायन, कवित्त वर्णविलास आदि है ।

बनादास राम काव्यधारा के कवियों में पूरे उत्तर भारत में प्रसिद्ध हैं । इनका जन्म सन् 1821 में हुआ था । वह गोंडा जिले के निवासी थे । उनके पिता का नाम गुरुदत्त सिंह था । इन्होंने महात्मा ल्मण बन से दीक्षा ली थी । इनकी भेंट परमहंस सियावल्लभशरण से बी हुई थी । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में अर्जपत्रिका, नामनिरुपण, रामपंचांग, सुरसरिपंचरत्न, विवेकमुक्तावली, रामछटा, गरजपत्री, मोहिनी अष्टक, अनुरागविवर्धक रामायण, पहाड़ा, मात्रा मुक्तावली, ककहरा अरिल्ल, ककहरा झूलना, ककहरा कुंडलिया, ककहरा चौपाई, खंडन खंड, विक्षेप विनास, आत्मबोध, साममुक्तावली, अनुरागरत्नावली, ब्रह्मसंगम, विज्ञानमुक्तावली, तत्वप्रकाश वेदात, सिद्धान्तबोध वेदान्त, शब्दातीत वेदान्त, अनिर्वाच्यि वेदान्त, स्वरुपानन्द वेदान्त, अक्षरातीत वेदान्त, अनुभवानन्द वेदान्त, वेदान्तपंचांग, ब्रह्मायन शांति सुषुप्ति, ब्रह्मायन परमात्मबोध, ब्राह्मायन पराभक्ति 'परतु', शुद्धबोध वेदान्त ब्रह्मायनसार, रकारादि सहस्रनाम, मकारादि सहस्रनाम, बजरंगाविजय, उभयप्रबोधक रामायण, विस्मरण सम्हार, सारशब्दावली, नाम परत्तु, नाम परत्तु संग्रह, बीजक, मुक्तमुक्तावली, गुरुमहात्म्य, संतसुमिरनी, समस्यावली, समस्या विनोद, झूलनपचीसी, शिवसुमिरनी, अनुमन्त विजय, रोग-पराजय, गजेन्द्र पंचदशी, प्रहलाद पंचदशी, द्रौपदी पंचदशी, दाम दुलाई, अर्ज पत्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

पर्वतीय क्षेत्रों पर भी रामकाव्य धारा प्रस्फुटित हुई । शीलमणि उसके मुख्य हैं । स्वामी शीलमणि जी का जन्म संवत् 1877 में

हुआ था । वह कुमायूं क्षेत्र के निवासी थे । उनके पिता का सुधीरपंत और माता का सुभद्रा देवी नाम था । इनके घर का नाम हर्षपंत था । पयहारीजी से इन्होंने दीक्षा ली थी जिन्होंने इनका नाम सीतारामदास रखा था । रामानन्द दास से भी इन्होंने उपदेश ग्रहण किया था । इनके ग्रन्थों में कनकभवन महात्म्य, सम्बन्ध प्रकाश, श्रीअवध प्रकाश, पदावली-संग्रह, पावस-वर्णन, पंचीकरण, विनयपत्रिका, रसमेल दोहावली, रत्नमंजरी रामकर मुद्रिका, सख्यरस दोहा, सख्यरस दर्पण, सियावरनाम मणिमाला, केदारकल्प वैदिक, कवितावली, होरी, ज्ञान भूमिका, सियाकर मुदिका, विवेक गुच्छा आदि का नाम उल्लेख किया जाता है ।

सरयूदास का नाम राम काव्य धारा में बड़े आदर के साथ लिया जाता है । महात्मा शीलमणि के शिष्य सरयूदास 'सुधामुखी' थे । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में 'पदावली, सर्वसारोपदेश, रसिकवसुप्रकाश तथा भक्तिनामावली है ।

सीतारामशरण 'रामरस रंगमणि' का स्थान इस दिशा में प्रसिद्ध है । स्वामी सीतारामशरण 'रामरसरंगमणि' का जन्म संवत् 1916 में हुआ था । इनके पिता का नाम अवधकिशोर प्रसाद और माता का नाम जगरामी देवी था । इन्होंने कामदेन्द्रमणि जी से दीक्षा ग्रहण की थी । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में 'श्रीरामस्तवराज टीका, श्रीसीताराम मानसीसेवा, श्री हनुमत यश-तरंगिणी, सरयूतरंग लहरी, श्रीसीताराम नखशिख; गीता बारहवां अध्याय भाषा टीका, श्री रामप्रेम परिचर्या, श्री रामायण बारहखड़ी, श्रीरामझांकी विलास, श्रीरामशत वंदना, ध्यानमंजरी टीका, श्री रामानन्द यशावली, श्री युगलजन्म बधाई, बारहमासा महात्म्य, श्रीरामलीलासंवाद, श्री सीताराम प्रेमपदावली, श्री सीताराम शोभावली, श्रीसीताराम झूलाविलास, श्रीसीताराम सुख विलास, श्री जानकी यशावली, श्रीरामजानकी विलास, भाषा रामरक्षा स्तोत्र, श्री सीताराम नाममंजरी, श्री नाभा जीकृत भक्तमाल की टीका आदि प्रमुख है ।

सियालालरण 'प्रेमलता' का सीन रामकाव्यधारा में महत्वपूर्ण है । स्वामी सियालालशरण 'प्रेमलता' का जन्म सत् 1871 में हुआ था

। यह ग्वालियर के निवासी थे । इनके पिता मौजीराम थे । इनका घर का नाम बालाराम था । इन्होंने बलदेवदास नामक संत से भक्ति की प्रेरणा ग्रहण की थी । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में वृहद् उपासना रहस्य, प्रेमलता पदावली, चैतन्य-चालीसा, सीताराम रहस्य दर्पण, नाम-रहस्यत्रयी, नामतत्व-सिद्धान्त, जानकी स्तुति, षड्ऋतु विमल विहार, सीताराम नामरुपवर्णन, सीताराम नाम जापक महात्म्य, ज्ञान पचासा, मिथिा विभूति प्रकाशिका, वैराग्य प्रबोधक बहत्तरी, हितोपदेश शतक, प्रेमलता बाराखड़ी, नाम सम्बन्ध बहत्तरी, नाम वैभव-प्रकाश चालीसा, जानकी विनय नामादि, नाम दृष्टांतावली, सतगुरु पदार्थ-प्रबोधिका, सन्त प्रसादी महात्म्य, अनन्य शतक, निजात्मबोध दर्पण, अपेल सिद्धान्त, षोडश भक्ति, सन्तमहिमा, उपदेश पेटिका, पंचसंस्कार, अष्टाम, जानकी बधाई, सारसिद्धान्त प्रकाश, नित्य प्रार्थना, विश्वविलास बीसिका आदि हैं ।

अन्य कवि -

भक्तियुगीन राम-काव्य की परम्परा के अन्तर्गत उपर्युक्त कवियों के अतिरिक्त अन्य बी अनेक कवियों ने योगदान दिया है । इनमें रामदास तपसीजी का नाम भी उल्लेखनीय है जिनके पिता पं. हरिनारायण थे और जिन्होंने महात्मा संतदास से दीक्षा ली थी । स्वामी मनभावन जी भी इसी परम्परा में हुए हैं जिन्होंने रामकथा से सम्बन्धित स्फुट काव्य की रचना की है । प्रसिद्ध संत जीवाराम के पिता और गुरु महात्मा शंकरदास भी । इस परम्परा में उल्लिखित किये जा सकते हैं । महात्मा मणिराम ने भी राम-कथा पर आधारित स्फुट काव्य की रचना की है । स्वामी लक्ष्मीनारायण दास पौहारी ने भी इस काव्यप्रवृत्ति के विकास में योग दिया । इनके पिता शिवराम पांडे थे । इन्होंने महात्मा अवध प्रसाद से दीक्षा ली थी । 'श्रीभक्ति प्रकाशिका शीर्षक ग्रन्थ की भी इन्होंने रचना की थी । महात्मा मणिराम के शिष्य स्वामी पतितदास ने भी 'गुप्तगीता', 'पतिपदावली' और भजनसर्वसंग्रह आदि कृतियों की रना की । पं. रामस्वरुप के पुत्र महात्मा रामशरण ने

रामदत्त जी से शिक्षा प्राप्त की थी । इनके दीक्षा गुरु महात्मा गरीबदास जी थे । इनके लिखे हुए 'रामतत्वसिद्धांत संग्रह' तथा मैथली रहस्यपदावली नाम ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है । श्री दुर्गादत्त के पुत्र बाबा रघुनाथदास ने हरिनाम सुमिरनी नामक एक कृति की रचना की थी । हनुमानशरण 'मधुरअली' ने भी इस काव्य-परम्परा में योग देते हुए युगलविनोदपदावली, युगल बसंत बिहार लीला, युगल हिंडोल लीला, युगलविनोद कवितावली तला रामदोहावली, आदि कृतियों की रचना की । विश्रामसागर नामक ग्रन्थ के लेखक रघुनाथदास रामसनेही थे जिनके गुरु देवदासजी थे । इनके शिष्य बलदूदास थे जिन्होने रामकुंडलिया की रचना की थी । पं. ईश्वरदत्त के विद्यार्थी रमेशदत्त इस परम्परा में जानकीवर शरण 'प्रीतिलता' के नाम से विख्यात थे । इन्होंने मिथिलामहात्म्य नामक एक ग्रन्थ की रचना की थी । परमहंस सीताशरण के पिता का नाम सुखदेव त्रिपाठी और माता का गौरादेवी था ।

इनका घर का नाम कामदानाथ था । इन्होंने शीलमणि जी से दीक्षा ली थी । पं. सीताप्रसाद भी इन्हीं के गुरु-भाई थे जिनके पिता का नाम ध्यानानन्द तथा माता का सरयूदेवी था । इन्होंने काव्य मधुकर दूत, चित्र चिन्तामणि, आनन्दार्णव, भ्रातृ पंचक, सीताष्टक, बजरंग विजय, कालिका स्तुति, ऋतुराज, प्रश्नावली, इश्क विनोद आदि ग्रन्थों की रचना की थी । महारानी वृषभानु कुंवरि रामप्रिया का नाम भी इसी परम्परा में उल्लिखित किया जा सकता है जिन्होने राम कथा से सम्बन्धित स्फुट काव्य की रचना की थी । स्वामी रामवल्लभाशरण 'युगलबिहारनी' गणेशदत्त दीक्षित के पुत्र थे । इनका घर का नाम बलदेव था । पं. भगवानदीन से इन्होंने काव्य-शिक्षा ग्रहण की थी । इन्होंने युगलबिहार पदावली शीर्षक एक ग्रन्थ की रचना की थी । स्वामी कामदेन्द्रमणि ने सीताराम भद्रकेलिकादिम्बिनी तथा श्रीराघवेन्द्ररहस्य रत्नाकर नामक ग्रन्थों की रचना की थी । श्री सीताराम शरण भगवान प्रसाद 'रुपकला' ने इस परम्परा में तनमन की स्वच्छंता उर्दू रोमन रीडर्स, शरीर पालन, हिफ्जे सेहत की उम्दा तदवीरें, आदि कृतियों की रचना की । श्रीगोमतीदास माधुर्यलता ने फुटकर पदों की ही रचना की थी । सियाशरण मधुकरिया

'प्रेमअली' का काव्य भी स्फुट रुप में ही उपलब्ध होता है । स्वामी जानकीप्रसाद ने रामनिवास रामायण, सीतारामविलास बारहमासा, राधाकृष्णमोदविलास बारहमासा, तथा पहेली आदि ग्रन्थों की रचना की थी । स्वामी कामदमणि ने स्फुट काव्य रचा था । श्री सीतारामशरण 'शुभलीला' ने युगलोत्कंठप्रकाशिका शीर्षक ग्रन्थ की रचना की थी । सियारामशरण 'तपसी' ने स्फुट काव्य लिखा है । जनकदुलारीशरण 'वामनजी' ने राम-कथा से सम्बन्धित स्फुट पदों की रना की थी । रामाजी ने ग्राम-गीतो की शैली में राम-कथा से सम्बन्धित राम-काव्य रचा । सद्गुरुप्रसादशरण ने भी स्फुट राम-काव्य की रचना की । काँचनकुंवरि ने इस परम्परा में काँचनकुसुमांजलि नामक कृति की रचना की ।

उपर्युक्त रामभक्त कवियों के अतिरिक्त इस परम्परा में अन्य बी अनेक महात्मा हु हैं जिन्होने इस प्रवृत्ति के विकास में योगदान दिया है । इनमें 'रामचरित तथा गनेसदेव लीला, के रचयिता मधुर अली, हनुमान चरित्र के रचयिता सुन्दरदास रामायण महानाटक के रचयिता प्राणचन्द्र चौहान, गुणराम रासों के रचयिता माधवदास चारण, हनुमन्नाटक के रचयिता हृदयराम, हनुमान्नाटक के रचयिता मानदास भाषारामायण के रचयिता कपूरचंद, लघुयोगवाशिष्ठ के रचयिता कृष्ण, जनक-पचीसी के रचयिता मंडन, दशरतराय के रचयिता सुखदेव मिश्र, अवधविलास के रचयिता लालदास रामचरित्र तथा अल्यिापूर्व प्रसंग के रचयिता बारहठ नरनहरदास, रामायण के रचयिता झामदास, जोगरामायण के रचयिता जोगराम रामायण तथा हनुमत पचीसी के रचयिता भगवंत सिंह, रघुवंशदीपक तथा कवितावली के रचयिता सहजराम, जुगलनखशिख के रचयिता पंचम सिंह, हनुमानजी की स्तुति के रचयिता हरिसेवक, रामविलास रामायण के रचयिता शंभुनाथ बदीजन, रामाश्वमेघ के रचयिता मधुसूदन, हनुमत पचीसी, के रचयिता इच्छाराम, हनुनाटक के रचयिता मनजू, सत्योपाख्यान के रचयिता ललकदास, रामचन्द्र चरित्र के रचयिता शिवसिंह, अनुमान पंचक, हनुमान पचीसी लक्ष्मणशतक तथा हनुमतनखशिख के रचयिता खुमान, रामरहस्य तथा रसपुंज ग्रन्थ के रचयिता सुंदरि कुंवर रामचरित

वृत्त प्रकाश, रघुराज घनाक्षरी, रामगीतमाला के रचयिता क्षेमकरण मिश्र, रामचरित मानस की टीका, के रचयिता हरिचरणदास, रामश्वमेघ के रचयिता हरिसहायगिरि, राम-रावणयुद्ध के रचयिता मून, कवितावली के रचयिता परमेश्वरीदास, वाल्मीकि-रामायण, श्लोकार्थप्रकाश तथा हनुमत पचीसी, के रचयिता गणेश बालकाण्ड रामायण, के रचयिता देवीदास कायस्थ, रामगुणोदय के रचयिता धनीराम, हनुमत बालचरित के रचयिता ब्रजलाल, सुसिद्धान्तोत्तम तथा कौशलपथ के रचयिता रुद्रप्रतापसिंह, सीताराम गुणार्णव के रचयिता गोकुलनाथ, प्रेमप्रधाना के रचयिता जानकी चरण, रामायन श्रृंगार के रचयिता शिवबख्शराय, अष्टयाम के रचयिता रामगोपाल, रामचन्द्र का नखशिख के रचयिता रुपसहाय, रामायण के रचयिता सीताराम, रामचन्द्र विलास, आल्हाद रामायण, अध्यात्म रामायण, रुपक रामायण सीतास्वंवर, रामविवाह खंड, रामायण सुमिरनी तथा मिथिला खंड के रचयिता नवसिंह कायस्थ, रामरहस्य, रामकंठाभरण के रचयिता भगवत्दास रानुजी जानकी पचीसी के रचयिता रामनाथ, अद्भुत रामायण, रामकथामृत, बाल्मीकि रामायण, तथा श्रीरामस्तोत्र, के रचयिता गिरिधरदास, रामायणसूचनिका, के रचयिता रसिक गोविंद, रामकलेवा, प्रधान नीति तथा धनुषज्ञय रहस्य के रचयिता रामनाथ प्रधान, चित्रकूट महात्म्य के रचयिता कृपाराम, रामस्वर्गारोहण के रचयिता लोनेदास, रामाष्टक के रचयिता मोतीराम, जुगल नखशिख के रचयिता प्रतापसिंह, भावनामृत कादंबिनी के रचयिता युगलमंजरी, रघुनाथसिकार अवधसिकार, साहित्य सुधासागर, तथा रागरत्नावली के रचयिता नत्नहरि, दूरदूरार्थ दोहावली, जन दमक दोहावली, रामरहस्य पूर्वार्द्ध, तथा रामरहस्य उत्तरार्द्ध के रचयिता रत्नहरि, चित्रकूट महात्म्य के रचयिता मोहन, संक्षेप रामायण के रचयिता विद्यारण्यतीर्थ, टीका नेह प्रकाश के रचयिता जकलाडिली शरण, रामरत्न मंजरी, युगल मंजरी तथा भवन्नामामृत कादंबिनी के रचयिता प्रियासखी, निजमन सिद्धान्त-सार, गणपतिमात्म्य तथा अध्यात्म रामायण के रचयिता किशोरदास, रामाश्वमेघ भाषा के रचयिता हरिदास सहाय, रामायण के रचयिता समरदास, जानकी पचीसी के रचयिता रामनाथ, तुलसी चिंतामणि के रचयिता हरिजन, वर्णप्रतिज्ञानोपदेश के रचयिता सियारामशरण, सियारामशरण चन्द्रिका, प्रेमरत्नाकर तथा प्रतापरत्नाकर के रचयिता लछिराम, रामायणशतक

तथा रामरत्नावली के रचयिता हरिबख्श सिंह, रामरत्नावली के रचयिता लक्ष्मण, राममंत्र रहस्य, जानकी जी को मंगलाचरण के रचयिता रघुबर शरण, जानकी सहस्रनाम के रचयिता श्री निवास, रामनवरत्न विज्जय के रचयिता जानकीप्रसाद (प्रथम), रामायण महात्म्य तथा रामगीता के रचयिता गोपालदास, रसिक विनोद के रचयिता दयानिधि, रामरत्नाकार, रामलीला प्रकाश, हनुमत, भूषण, तुलसी भूषण तथा मानस भूषण के रचयिता सरदार कवि, बाल्मीकि रामायण भाषा के रचयिता छत्रधारी, रामायण तथा रामविलास के रचयिता ईश्वरी प्रसाद, रामायण के रचयिता गोमतीदास, भक्तिविलास, मसल विवेक मानस की शीलावृत्ति टीका, के रचयिता बाबा हरिदास, रसिक प्रकाश भक्तमाल की सुबोधिनी टीका, के रचयिता वासुदेवदास, रामजन्म के रचयिता सूरजदास, रामश्वमेघ के रचयिता मोहनदास, अद्‌भुत रामायण भाषा के रचयिता गोकुलप्रसाद, ब्रज, भक्तिसागसिद्धान्त के रचयिता रामवल्लभशरण, रामनाम तत्वबोधिनी के रचयिता रामदयाल, रामभक्ति प्रकाशिका के रचयिता जानकीप्रसाद (द्वितीय), महारामायण के रचयिता भगवानदास खत्री, भक्तमन रंजनी के रचयिता प्रेमसखी (द्वितीय), हनुमान पैज के रचयिता लालकवि, रामायण रामानुरागावली के रचयिता वैदेहीशरण, पदावली के रचयिता श्यामसखे, वाणी, सिद्धांत विचार तथा भक्तनामावली के रचयिता ध्रुवदास, मानस शंकावली के रचयिता बन्दन पाठक, अवध विलास रामायण के रचयिता इन्द्रजीत, अद्‌भुत रामायण के रचयिता लालमणि, गीतरामायण के रचयिता महाबीरदास, मिथिला महात्म्य के रचयिता चतुरदास, रामचन्द्रनखशिख के रचयिता राघवदास, सीतारामविवाह संग्रह के रचयिता श्यामनाथ, प्रेमप्रकाश के रचयिता गौरीशकर, विजय ाघव खंड के रचयिता बंदीदीन दीक्षित, सातों कांड रामायण के रचयिता समर सिंह, रामरहस्य रामायण के रचयिता पूथपूरनचन्द्र, रामतत्वबोधिनी के रचयिता शिवप्रकाश सिंह, रामायण कवित्त के रचयिता शंकर त्रिपाठी, राम नखशिख के रचयिता मुनिलाल, माधवपुर रामायण के रचयिता माधव कत्थक, बाल्मीकि रामायण भाषा के रचयिता महेश दत्त, सम्बन्धतत्व भास्कर के रचयिता शीताराम प्रबोधाचार्य, रहस्य तत्व भास्कर के रचयिता पद्‌मनाभाचार्य, संक्षिप्त उपासना क्रांड के रचयिता मानदमणि, रामचन्द्र की बारामासी

के रचयिता छेदालाल, परशुराम संवाद के रचयिता काशीराम, रघुनाथं शतक के रचयिता मुन्नालाल, जानकी रामचरित नाटक के रचयिता हरीराम, रामचरित्र दोहावली के रचयिता युगलप्रसाद चौबे, सियालाल समय, रस वर्द्धिनी तथा कवित्तदास के रचयिता अली सियारसिक, युगल सनेह विनोद तथा प्रेमचन्द्रिका के रचयिता रसिक वल्लभ शरण, रामजन्म के रचयिता स्वयंप्रकाश, रामस्तुति, विज्ञप्तिसार, भक्त-विज्ञप्तिसार तथा रामपंचाशिका के रचयिता गुमानी पंत, सरजू अष्टक के रचयिता रामकिशोर दास, अवध विलास के रचयिता विष्णुप्रसाद कुंवरि और रामप्रिया विलास के रचयिता रामप्रिया हैं ।